BIBLIOTHECA INDICA:

A

COLLECTION OF ORIENTAL WORKS

PUBLISHED BY THE

ASIATIC SOCIETY OF BENGAL.

NEW SERIES, No. 269.
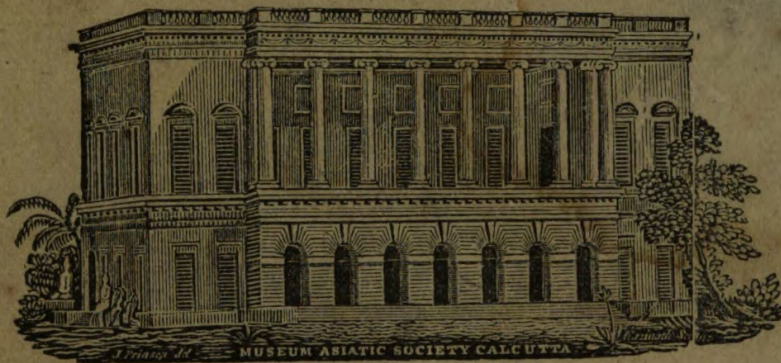
THE

PRITHIRA'JA RA'SAU

OF

CHAND BARDAI.

EDITED IN THE ORIGINAL OLD HINDI'

BY

JOHN BEAMES,
BENGAL CIVIL SERVICE.

PART I.

FASCICULUS I.

CALCUTTA:

PRINTED BY C. B. LEWIS, AT THE BAPTIST MISSION PRESS.

1873.

अथ
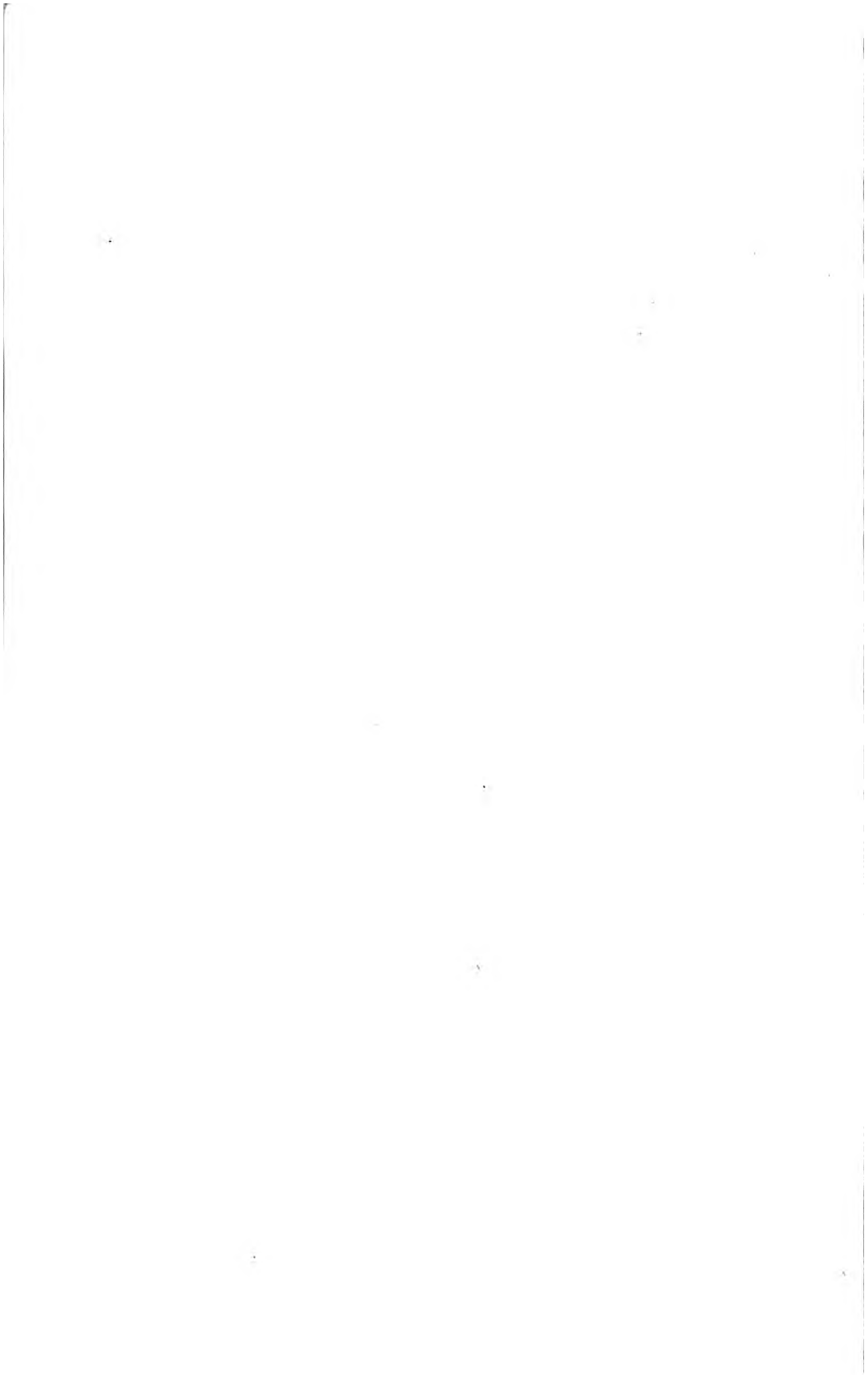
श्री कवि चंद बर्दाई कृत

प्रथीराज चैाहान रासैा

लिष्यते ।

॥ १ ॥ आदि पर्व्व ॥ १ ॥

प्रथम साटक छंद ॥

आदि प्रनम्य नम्य गुरुयं वानीय वंदे पयं ॥
सिष्टं धारन धारयं वसुमती लछीस चरनाश्रयं ॥
तमगुन तिष्ठति ईस दुष्ट*दहनं सुरनाथ सिद्धिश्रयं ॥
थिर चर जंगम जीव चंदनमयं सर्वेस वरदामयं ॥१॥

वथूआ छंद ॥

प्रथम सुमंगल मूल श्रुतवीय ॥
स्मृतिसत्य जल सिंचिय इ ॥
सुतरु एक धर भ्रम्मं उभ्यौ ॥
चिषट साष रम्मिय चिपुर ॥
बरन पत्त† मुष पत्त† सुभ्यौ ॥

---

* This reading is from A. † B. in both पत ।

कुसुमरंग भारह* सुफल ॥
उकति अलंब अमीर ॥
रस दरसन पारस† रमिय ॥
आस असन कवि कीर ॥ २ ॥

कवित्त ॥

प्रथम किय मंगल प्रमान ॥
निगम संपूजय‡ वेद धुर ॥
त्रिगुन साष त्रिहुं चक्र ॥
बरन लगो सुपत्तछर ॥
त्वचा ध्रम्म उद्धरिय ॥
सत्त फूल्यौ चाव दिसि ॥
क्रमं सुफल उदयत ॥
अम्रत सुम्रत मध्य वसि ॥
डुल्लै न वाय न्रप नीति ध्रति ॥
स्वाद अम्रत जीवन करिय ॥
कलि जाय न लग्गै कलंक इहि ॥
सति मति आढति धरिय ॥ ३ ॥

---

* है B. † परस A. ‡ संपजय B.

कवित्त ॥

भुगति भूमि किय क्यार ॥ वेद सिंचिय जल पूरन ॥
बीय सुबय लय मध्य ॥ ग्यान अंकूर सजूरन ॥
त्रिगुन साष संग्रहिय ॥ नाम बहु पत्त रत छित्ति ॥
सुक्रम सुमन फुल्लयौ ॥ मुगति पक्का द्रव संगति ॥
दुज सुमन डसिय* बुध पक्क रस ॥
बट बिलास गुन पत्तरिय ॥
तरु इक्क† साष चय लोक महि ॥
अजय बिजय गुन विस्तरिय ॥ ४ ॥

छंद भुजंग प्रयात ॥

प्रथम भुजंगी सुधारी ग्रहनं ॥
जिनै नाम एकं अनेकं कहनं ॥
दुती लब्भयं देवतं जीवतेसं ॥
जिनै विश्व राष्यौ बली मंच सेसं ॥
चवं वेद वंभं हरी कित्ति भाषी ॥
जिनै ध्रम्म साध्रम्म संसार साषी ॥
तृती भारती व्यास भारथ्य भाष्यौ ॥
जिनै उतपारथ्य सारथ्थ साष्यौ ॥
चवं सुषदेवं परीषत पायं ॥

---

* भसिय A and B. † सुमन A and B.

जिनै उद्धर्यौ अब कुरुवंस रायं ॥
नरंरूव पंचम्म श्री हर्ष सारं ॥
नेलैराय कंठं दिनै षद्ध हारं ॥
छठं कालिदास सुभाषा सुबद्धं ॥
जिनै वाग वानी सुवानी सुबद्दं ॥
कियौ कालिका मुष्य वासं सुसुद्ध ॥
जिनै सेत बंध्यौ तिभोजन प्रबंधं ॥
सतं डंडमाली उलाली कवित्तं ॥
जिनै बुद्धितारंग गंगासरित्तं ॥
जयदेव अठं कवी कब्बिरायं ॥
जिनै केवल कित्ती गोविंद गायं ॥
गुरं सब्ब कब्बी लहु चंद कब्बी ॥
जिनै दरसिय देवि सा अंग हब्बी ॥
कवी कित्ति कीत्ती उकती सुदिष्यी ॥
तिन की उचिष्टी कवि चंद भष्यी ॥ ५ ॥

दोहा ॥

उचिष्ट चंद छंदह बयन ॥ सुनत सु जंपिय नारि ॥
तन पवित्र पावन कविय ॥ उकति अनूठ उधारि ॥ ६ ॥

कवित्त ॥

कहै कंति सम कंत ॥ तंत पावन बड कवि ॥

तंत मंत उच्चार ॥ देवि दरसिय मझ्झि हब्बिय ॥
तंत बीर उग्रंत ॥ रंग राजन सुष दाईय ॥
बाल केल प्रत्यंग ॥ सुरनि उद्धरि कविताईय ॥
अवलंब उकति उच्चार करि ॥
जिहित मोहि को विद रहै ॥
समब्रह्मरूप या सबद कहुं ॥
क्यौं उचिष्ट कविय न कहै ॥ ७ ॥

कवित्त ॥ चंद वाक्यं ॥

सम बनिता वरबंदि ॥
चंद जंपिय कोमल कल ॥
सबद ब्रह्म इह सत्ति ॥
अपर पावन कहि अमल ॥
जिहित सबद नहि रूप ॥
रेष आकार ब्रन्न नहि ॥
अकल अगाध अपार ॥
पार पावन चयपूर महि ॥
तिहि सबद ब्रह्म रचना करौं ॥
गुरु प्रसाद सरसें प्रसन्न ॥
जद्यपि सु उकति चुकैं जुगति ॥
तो कमल बदनि कवितह हसन ॥ ८ ॥

कवित्त ॥ चंद स्त्री वाक्यं ॥

तुम बानो वर वंद ॥ नाग देखंत विमल मति ॥
छंद भंग गुन रहित ॥ कंठ कौमार काव्य क्रत ॥
बुधितरंग सम गंग ॥ उकति उच्चार अमीय कल ॥
सुनर सुनत विहसंत ॥ मंत जनु वस्य करन बल ॥
    अवतार भूप प्रिथिराज पहु ॥
    राज सुष तिन समलहहि ॥
    बीराधिबीर सामतं सब ॥
    तिन सु गल्ह अच्छी कहहि ॥ ९ ॥

कवित्त ॥ चंद वाक्यं ॥

गजगवनी प्रति चंद ॥ छंद कोमल उच्चारिय ॥
मनहरनी रसवेली ॥ सुरन सागर रस धारिय ॥
बंक नयन बयबाल ॥ प्रानबल्लभ सुषदाईय ॥
गरू अगुन निगुन ग्रहनि ॥ गवरिपूजा फल पाइय ॥
    भए आदि अंत कविता जिते ॥
    तिन अनंत गति मति कहिय ॥
    अनेक ग्रंथ तिन बरन बत ॥
    यौं उचिष्ट मति में लहिय ॥ १० ॥

छंद पद्धरी ॥

    प्रनम्य प्रथम मम आदि देव ॥
    ॐकार सबद जिन करि अछेव ॥

निरकार मध्य साकार कीन ॥
मनसा विलास सह फल फलीन ॥
त्रयगुनह तेज त्रयपुर निवास ॥
सुर सुरग भूमि नर नाग भास ॥
फुनि ब्रह्मरूप ब्रह्मांड* चारि ॥
कथि चतुर वेद प्रभु तत्तसार ॥
बरनयौ आदि करता अलेष ॥
गुन रहित गुननि नह रूप रेष ॥
जिहि रचे सुरग भू सत्त पाताल ॥
जम ब्रह्म इंद्र रिषि लोकपाल ॥
पवनह अरु अग्गि जल धर अकास ॥
सरिता समुद्द थिति गिर निवास ॥
असि लष्ष च्यारि रचि जीव जंत ॥
बरनंत ते न हों लहों अंत ॥
अट्ठार बन्न वेली सु कीन ॥
नाना प्रकार सब गुन अधीन ॥
करि सकै न कोई अग्या हि भंग ॥
धरि हुकम† सीस दुष सहै अंग ॥
दिन मान देव रबि रजनि भोर ॥
उग्गै इ बनै प्रभु हुकम‡ जोर ॥

---

* ब्रह्मा उचारि A. † حکم ‡ حکم زور

ससि सदा राति अग्या अधीन ॥
उग्गै अकास होय कलाहीन ॥
द्रिगपाल दाबि रहै सबर* भूमि ॥
मचकें न कोर रहै चांपि चूमि ॥
परिमान पवन करै गवन गाह† ॥
घटि बढी न अंग मंडै उछाह ॥
इंद्र सुरग मेघ अग्या अकास ॥
बरषा सु बरष रष्षे हुलास ॥
धर रहि अचल होय प्रभु प्रताप ॥
हलि चलि न निमष सक्कै संताप ॥
उट्ठंत लहरि लग्गी अकास ॥
तट समुद सत्त नहि षोंज तास ॥
परिमान अप्प लंघै न कोइ ॥
करै सोइ क्रम प्रभु हुकम जोइ ॥
अग्या न मेटि को सकै ताहि ॥
भूत न भविस्य को व्रत्तमां हि ॥
वरनयौ वेद ब्रह्मा अछेह ॥
जल थलह पूरि रह्यौ देह देह ॥
पुनि कहै व्यास दस अठ पुरान ॥
अवतार रचित नाना विधान ॥

---

* صبر † گاہ

वरनयौ विमल मति देव देव ॥
सब रहै सोधि न हल्लह्यौ भेव ॥
फुनि बालमीक रामावतार ॥
शत कोटि ग्रंथ कथि तत्त सार ॥
विध्वंसि सीयक जदेव दाद ॥
प्राक्रम रीछ कपि दयित वाद ॥
पुनि पंच काव्य कवितान कीन ॥
अग्यान नरन उर दीप दीन ॥
कित्तीक बात मो मति प्रकास ॥
करि सकों ग्रब्ब* ते। होइ हास ॥ ११ ॥

दूहा ॥

सुनत काव्य कवि चंद कैा ॥ चित आनन्दी नारि ॥
तुम बानी बानी प्रसन्न ॥ हसन हुवंत निवारि ॥१२॥

कवित्त ॥

कहे कंति मतिवंत ॥ तंत रसना रससागर ॥
तुम गुन श्रवन सुहतं ॥ जानि चमकंत कलाकर ॥
तुम देवी बर दानि ॥ दान दीजै मुहि कब्बिय ॥
अष्टादसह पुरान ॥ नाम परिमानह सब्बिय ॥

---

* ग्रब्ब A (*i. e.* सर्व्व), but the reading in the text ग्रब्ब (*i. e.* गर्व्व boasting, pride) suits better.

तुम कथत कथन आनंद मुहि ॥
अग्ग पछू भव सुद्दरै ॥
अग्यान तिमर नट्ठ य सुनत ॥
अंध्वक मल हिय उद्दरै ॥ १३ ॥

छंद पद्धरी ॥

ब्रह्मन्यदेव सम वासुदेव ॥
अष्टादस पुरान तिन कहै सभेव ॥
तिन कहों नाम परिमान ब्रन्नि ॥
जिन सुनत सुद्ध भव होा तन्ननि ॥
ब्रह्मह पुरान दस सहस जुट्टि ॥
जिहि पढत सुनत तन तप्य छुट्टि ॥
पंचास पंचह हज्जार* गन्नि ॥
पद्मह पुरान तिन कह्यौ ब्रन्नि ॥
तेवीस सहस सैं च्यारि जानि ॥
विष्णु पुरान विष्णु समानि ॥
चैावीस सहस कहि शिव पुरान ॥
तिहि पढत सुनत सम अमिय पान ॥
अठार सहस भागवत भेव ॥
करि पार परिष्यत सुक्कदेव ॥

---

* هزار

नारद पुरान कहि पाव लाष ॥
तहां मुक्ति मोद आनंद भाष ॥
मारकंड नाम तेईस हजार ॥
पैारान पवित्र सो दुष जार ॥
पंद्रह हजार संष्या संपूर ॥
अग्नि पुरान पढि पाप दूर ॥
चवदै हजार सैं पांच पढि ॥
भवषित पुरान सो पाप जड्डि ॥
ब्रह्मवैव्रत सहसं अठार ॥
केवल गिनान कथि भक्ति सार ॥
रुद्रह हजार लिंगह पुरान ॥
आनंद अर्थ आगम गुरान ॥
चैावीस सहस बाराह भक्ति ॥
पैारष पुरान तिन अमित सक्ति ॥
हजार इक्यासी कहि विवेक ॥
स्कन्द पुरान भव भक्ति एक ॥
इग्यार सहस वामन सु अच्छ ॥
पैारान सुनत सुधि अग्ग पच्छ ॥
सत्रह हजार कूरंभ पुरान ॥
भाषा विनोद प्राक्रम गुरान ॥

विद्या हजार मित मछ देव ॥
विधि संष उद्धरे सेव भेव ॥
गुनईस सहस गरुड़ह पुरान ॥
श्रोतान वक्त भक्ति उरांन ॥
ब्रह्मांड पुरान बारह सहंस ॥
करि व्यास भक्ति प्रभु कंस नंस ॥
पंद्रह हजार अरु च्यारि लाष ॥
सम ब्रह्म व्यास कहि चंद भाष ॥ १४ ॥

दूहा ॥

फूली कित्ति चहुआन की ॥
जुग्गनि जुग्गनि वास ॥
अप्प मत्ति सरसें सबल ॥
मति करौ कबि हास ॥ १५ ॥

गाहा ॥

पय सक्करी सुभत्तौ ॥
एकत्तौ कनय राय भोयंसी ॥
कर कंसी गुज्जरीय ॥
रब्बरियं नैव जीवंति ॥ १६ ॥
सत्त षनै आवासं ॥
महिलानं मह सद्द नूपरया ॥

सनफल बज्जुन पयसा ॥
पब्बरियं नैव चालंति ॥ १७ ॥
रब्बरियं रस मंदं ॥
क्यू पुज्जंति साध अमियेन ॥
उकति जुकतिय ग्रंथं ॥
नथि कत्य कवि कत्थिय तेन ॥
पते वसंत मासे ॥
कोकिलं झंकार अंब बन करयं ॥
बर बंबू रवि रष्यं ॥
कपोतयं नैव कलयंति ॥ १८ ॥
सहसं किरन सुभाऊ ॥
उगि आदित्य गमय अंधारं ॥
अप्पं उमान सारो ॥
भोडलयं नैव झलकंति ॥ १९ ॥
कज्जल महि कस्तूरी ॥
रानी रेहंत नयन श्रृंगारं ॥
कां मसि घसि कुंभारी ॥
किं नयने नैव अंजंति ॥ २० ॥
ईस सीस असमानं* ॥
सुर सुरीस लिल तिष्ठ नित्यानं ॥

* آسمان

फुनि गलती पूजारा ॥
गडुवा नैव ढालंति ॥ २१

दुहा ॥

कहां लगि लघुता वरनवें ॥
कविन दास कवि चंद ॥
उन कहि तेजो उब्बरी ॥
सो बकहें करि छंद ॥ २२ ॥
सरस काव्य रचना रचें ॥
षल जन सुनि न हसंत ॥
जैसे सिंधुर देषि मग ॥
स्वान सुभाव भुसंत ॥ २३ ॥
तो पनि सुजन निमित्त गुन ॥
रचिये तन मन फूल ॥
जूका भय जीय जानिकें ॥
क्यों डारिये दूकूल ॥ २४ ॥

साटक ॥

मुक्ताहार विहार सार सुबधा अबुधा बुधा गोपिनी ॥
सेतं चीर सरीर नीर गहिरा गौरी गिराजोगिनी ॥
बीना पानि सुवानी जानि दधि जाहं सारसा आसिनी ॥
लंबी जा चिहुरार भार जघना विघना घना नासिनी ॥
॥ २५ ॥

छचं जा मदं गंध राग रुचयं अलिभूरि आच्छादिता॥
गुंजा हार अधार गुन जा झंझा पया भासिता॥
अग्रे जा स्रुति कुंडलं करि करः स्तु दीर उद्दारयं॥
सोयं पातु गनेस सेस सफलं पृथिराज काव्य क्तते॥२६॥

छंद विराज॥

रतं रत्त भारी॥ करुना बिचारी॥
लियै सात नष्य॥ वियो संष लष्यं॥
मिले एक दीहं॥ रमै काम सीहं॥
इकं रिष्य आयै॥ दियो काम चायै॥
षिज्यै रिषि भारी॥ दियै काम डारी॥
भयै पुच तब्बं॥ धजा मोर सब्बं॥
सिरो माल धारी॥ गनेसं बिचारी॥
षिजे तब्ब ईसं॥ भयै रोस बीसं॥
अबल्लाइ कल्ली॥ वियै पुरुष भिल्ली॥
डके डोरं नद्दं॥ हन्यौ पुच बद्दं॥
षिजी मात भारी॥ सरायं बिचारी॥
करी जाकु ईसं॥ धर्यौ पुच सीसं॥
सबै कज्ज अग्गै॥ तुहि नाम लग्गै॥
कलानंद रूपं॥ गनेसं सभूपं॥
इकं दंत दंती॥ बिराजंत कंती॥
सुभै दंत ऐसे॥ कविंदं प्रसंसै॥

मनो भूमि धारी ॥ बराहं उपारी ॥
इसी नद्ध* तेजं ॥ कला सोम केजं ॥
नमो देव कद्दं ॥ प्रजा ईस मद्दं ॥
भषै भूत प्रेतं ॥ तिजारी न हेतं ॥
इकं दीह एकं ॥ दुती देहै मेकं ॥
भगतं सुचक्री ॥ दियै लछी वक्री ॥
इकं चोष अर्थं ॥ करै नाक नथं ॥
सुभक्ती समती ॥ जलं माहि पती ॥
धरै आक सीसं ॥ चिलोक ईस ईसं ॥
चयं वेद जक्की ॥ प्रियं चंद भक्की ॥ २७ ॥

दुहा ॥

नमसकार संकर कियै ॥
सरसै बुधि कवि चंद ॥
सती लंपट लंपट नवी ॥
अबुधि मंच सिसु इंद ॥ २८ ॥

दुहा ॥

साधन भोग संजोग रजि ॥
मंडन आव अषूट ॥
नमो उमा उर आभरन ॥
जय बंधन जट जूट ॥ २९ ॥

---

* दद्व B.

छंद विराज ॥

जटा जूट बंदं ॥ लिलाटंत चंदं ॥ विराजंत छंदं ॥
भुजंगी गलिंदं ॥ शिरो माल इंदं ॥ गिरिजा अनंदं ॥
सिरै सिंघि नद्दं ॥ रनै वीर मद्दं ॥ करी चर्म सद्दं ॥
करं काल षद्दं ॥ उनैं गंगहद्दं ॥ चषी अग्गि दद्दं ॥
प्रलै जानि जद्दं ॥ जयो जोग सद्दं ॥ घटा जानि भद्दं ॥
जरै काम तद्दं ॥ हरै चाहि बद्दं ॥ रचै मोह कद्दं ॥
बचै दूरि दद्दं* ॥ नटे भेष रद्दं ॥ नमो ईस इंदं ॥ ३० ॥

दूहो ॥

करिये भक्ति कवि चंद हर ॥
हरि जंपिय इह भाइ ॥
ईस स्याम जू जू कहै ॥
नरक परतंह जाइ ॥ ३१ ॥

स्लोक ॥

परात्परतरं याति । नारायणपरायणं ॥
न ते तत्र गमिष्यंति । जे दुषंति महेश्वरं ॥ ३२ ॥

साटक ॥

गंगाया भ्रगुलत्त वसनमसनं लछी उमा दो वरं ॥
संषं भूत कपालमाल असितं वैजंति माला हरी ॥

---

* सद्द B.

चम मध्य विभूति भूतिकयुगं विब्भूति मायाक्रमं ॥
पापं विहरति मुक्तिं अप्पन वियं बीयं वरंदेवयं ॥३३॥

गाहा ॥

आसा महोव कव्वी ॥
नव नव कित्ती संग्रहं ग्रंथं ॥
सागर सरिस तरंगो ॥
बोहथ्थयं उक्तियं चलयं ॥ ३४ ॥

दूहा ॥

काव्य समुद्र कवि चंद कृत ॥
मुगति समप्पन ग्यांन ॥
राजनीति बोहिथ सुफल ॥
पार उतारन यांन ॥ ३५ ॥
छंद प्रबंध कवित्त जति ॥
साटक गाह दुहथ्थ ॥
लहु गुर मंडित षंडिय हि ॥
पिंगल अमर भरथ्थ ॥ ३६ ॥

कवित्त ॥

अति ढंक्यौ न उघार ॥ सलिल जिम पिष्षि सिवारह ॥
वरन वरन सोभंत ॥ हार चतुरंग विसालह ॥
विमल अमल वानी विसाल ॥ वयन वानी वर ब्रनन ॥
उक्तिन बयन विनोद ॥ मोद श्रोतन मनहर्नंन ॥

युत अयुत जुक्ति विचार विधि ॥
बयन छंद छुट्यौ न कह ॥
घटि बढ्डि मति कोई पढई ॥
तौ चंद दोस दिज्जौ न वह ॥ ३७ ॥

स्लोक ॥

उक्तिधर्म्मविसालस्य ॥ राजनीति नवं रसं ॥
षट्भाषा पुरानं च ॥ कुरानं कथितं मया ॥ ३८ ॥

कवित्त ॥

चरन नीम अछिर सुरंग ॥
पाट लहु गुरु विधि मंडिय ॥
सुर विकास जारी सु* मुष्य ॥
उक्ति रस गौघनि छंडिय ॥
जुगति छोह विस्तरिय ॥
सिढियन घाट सुबद्दिय ॥
महि मंडन मेधान ॥
याहि मंडन जस सद्दिय ॥
घन तर्क उतर्क वितर्क जति ॥
चिचरंग करि अनुसरिय ॥
विस्वकर्म† कवि निर्मइय ॥
रसियं सरस उच्चरिय ॥ ३९ ॥

---

* समुष्यं B. † विस्वकर्म कर्म. B.

अरिल्ल॥

तर्क वितर्क उतर्क सुजतिय॥
राज सभा सुभ भासन भतिय॥
कवि आदर सादर बुध चाहै॥
तौ पटि करि गुन रासौ निर्बाहै॥ ४०॥
धर्म्म अधर्मन बुद्धि विचारी॥
नयन नारिनिय नेह निहारी॥
कौक कलाकल केलि प्रकासैं॥
तो अरथ करी गुन रासौ भासौ॥ ४१॥
पारासर जो पुत्त विहासह॥
सतवंती ग्रभं गुर भासह॥
प्रब्ब अठार सवा लष्य लष्यै॥
तौ भारथ* गुर तत्त विसष्यै॥ ४२॥

कवित्त॥

रासौ बर बुद्धि सिद्धि॥
सुद्धि सो सब्ब प्रमानिय॥
राज नीति पाईयै॥
ग्यान पाईयै सुजानिय॥
उक्ति जुगति पाईयै॥
अरथ घटि बढि उन मानिय॥

* नारथ. A.

या समान गुन आप ॥
देव नर नाग बषानिय ॥
भविछत भूत व्रतह गुनित ॥
गुन चिकाल सरसईय ॥
जो पढय तत्त रासै। सुगुर ॥
कुमति मति नहि दरसईय ॥ ४३ ॥

दूहा ॥

कुमति मति दर्सन तिहि ॥
विधि विनान अब्बान ॥
तिहि रासै। जु पविच गुन ॥
सरसै। ब्रन्न रसान ॥ ४४ ॥
सत सहस नष सिष सरस ॥
सकल आदि मुनि दिष्ष ॥
घट बढ मत कोउ पढौ ॥
मोहि दूसन न वसिष्ष ॥ ४५ ॥ १ ॥

गाहा ॥

अरथं ढंकि न सहसा ॥
उघारै नवथ्थि एकलया ॥
मझं मझ प्रमानं ॥
चतुर स्त्री हारयं जेमं ॥ ४५ ॥ २ ॥

कवित्त ॥

दानव कुल छचीय ॥ नाम ढुंढा रष्यस बर ॥
तिहि सु जोत प्रथिराज ॥ सुर सामंत अस्ति भर ॥
जिहि जोति कवि चंद ॥ रूप संजोगी भोगी भ्रम ॥
इक दीह उपन्ने ॥ इक दीहै समाय क्रम ॥
जथ कथ्य तथ्य होइ निर्मये ॥ जोग राज नाल हिय* ॥
वज्रंगबाहु अरिदलमलन ॥ तासु कित्ती चंद कहिय ॥
॥ ४६ ॥

अरिल्ल ॥

प्रथम राज चहुवान पिथ्थ बर ॥
राजधान रंजे जंगल धर ॥
मुष सु भट्ट स्रूर सामंत दर ॥
जिहि बंध्यौ सुरतान प्रान भर ॥ ४७ ॥
हं कवि चंद मित सेवह पर ॥
अरु सुहित्त सामंत स्रूर बर ॥
बंधौं किति प्रसार सार सह ॥
अष्यौं बरनि भंति थित्ति यह ॥ ४८ ॥

छंद हनुफाल ॥

इति हनूफालय छंद ॥
कल बरनि बरनि सु कंद ॥

---

* जोग भोग राजन लहिय· B.

नहि नाल पिंगल जोर ॥
दुज हुंतो दुजनिय भोर ॥
संसार बंधन दोय ॥
इक पर्य्यौ विद्य समोय ॥
न न देइ अछ्छर एक ॥
नहिं पिंग पिंगल मेक ॥
किहि काल मरन सु विप्प ॥
लहि नाग रूप सु अप्प ॥
हरि हयौं बाहन आइ ॥
तिंहिं कह्यौ पिंगल चायि ॥
दै विद्य रूप सु अद्व ॥
सो गयो छल करि सद्व ॥
सो तछ्य बोर प्रमान ॥
जुग जुगिनि निश्चल ध्यान ॥
इक हुंतो सिंगिय रीष्य ॥
तप करै बाल विसिष्य ॥
न्टप गयो बर आषेट ॥
दिषि अप्प म्रतक बेट ॥
वाराह रूप प्रमान ॥
लग्यौ सु ब्रह्म धियान ॥

दह बार बुझैग राज ॥
दुज दिय न उत्तर काज ॥
लषि चित्त चिच सपूत ॥
यो भयौ रिषि अवधूत ॥
भयौ ताम तामस राज ॥
लियौ गोन मंच विराज ॥
कम्मान कोा नक संधि ॥
नृपराज दुज गल बंधि ॥
फिरि गयौ ग्रेह प्रमान ॥
आयौ सु बालक थान ॥
षिजि कह्यौ नैन भरीव ॥
तम ताम रूप सरीव ॥
पै जुन्न बालक बुझि ॥
गलि गर्भ क्यौं न वितुझि ॥
तिहि तजिय तातह मान ॥
धरि कोप अंग निधान ॥
करि क्रोध अंषि सु रत्त ॥
हवि जानि लग्गिय लत्त ॥
जिहि जियत पुचह अप्प ॥
को तात लभ्भय दप्प ॥

रिस करौं जाेव प्रमान ॥
जरै तीन लाेक अमान ॥
रिस तेज कंपत बाल ॥
दिष्यौ सु तात विसाल ॥
वह लग्गि ब्रह्म धियान ॥
भयाै काेटि तामस ताम ॥
अति लाेल दिष्षि रिषि लाेइ ॥
दिष्यौ सु तात समाेइ ॥ ४९ ॥

कवित्त ॥

जाेरि हथ्थ युति मंच ॥
फिर्यौ परदछि लग्गि पय ॥
रुधिर नयन आरक्त ॥
कंठ लग्यौ सु मुक्ति भय ॥
भूत द्वार विभार ॥
गाजि* आईय सुत मग्गं ॥
भर भर भर उच्चार ॥
राेस दावानल लग्गं ॥
जिहि हत्यो अप्प माे तात गर ॥
गनिव सत्त दिन में प्रमित्त ॥

* जाजि ।

जो हत्यो अप्प तक्षक सुब्रत ॥
कैकाया अब्रत सुगति ॥ ५० ॥

साटक ॥

धन्योधन्य सुबाल तापन तनं बाल बलं बिह्वलं ॥
सोयं पुत्र कि सोस दोस त्रिविधं बानीय गद्गद गलं ॥
एनं भूप विसाल भूमि भरनं धर्मंधरा राजनं ॥
तं तेजंन विचार व्याघ्र विघन नैवापि संतापयं ॥ ५१ ॥
दत्वा आप्पमिदं श्रुतं गुरुवरं मृत्यंच राजानयं ॥
सत्यं सप्त दिनानि पानिपवरं नैवं चलंते पय ॥
त्वं आप त्रयलोक जालति बरं भुक्ते वरं पुत्रयं ॥
एकं दीह सुतप्य प्रापति पदं त्रैलाकयं त्रासयं ॥ ५२ ॥

दूहा ॥

सब रिषि मै मो पुत्र तूं ॥
बय दिष्षौ परसान ॥
मानहुं इंदो वर उदै ॥
बढति कला वर भान ॥ ५३ ॥

कवित्त ॥

पुत्र छंडि रिषिराज ॥
जाइ न्टप थान सुपत्तौ ॥
पंथ कुलह संग्रह्यौ ॥

रिषि आपान विरत्तौ ॥
अति सुदीन सिर नोच ॥
उंच नहि भाल उचाइय ॥
द्रिष्टि दिष्ट राजन चरित्त ॥
मंगन न्टप आईय ॥
एकंग एक जोगिंद्र वर ॥
धातु न बंधे हथ्थ पर ॥
किहि काज रिषि आयौ घरहि ॥
उर धर अद्वर लग्ग डर ॥ ५४ ॥

गाहा ॥

जो जंप्यौ रिष पुचं ॥
प्रलयं होइ सत्तियं कालं ॥
जं भावै जो भम्मं ॥
सो कीजै राजनं बलयं ॥ ५५ ॥

छंद चोटक ॥

न्टप छंडि प्रजंक प्रजंकपला* ॥
मुहमुंदिरु भान कमोद कला ॥
न्टप दीन हल्यौ बहुचित्त चितं ॥
सुहल्या जनु पोंनय पीप पतं ॥

* दला A.

पतनं गुर जानि चरन्न लग्यौ ॥
बहुयौं रिषि राज* प्रान दग्यौ ॥ ५६ ॥

गाहा ॥

मनो रिषि हथ्थ प्रान ॥
बल्लीकं जीवनं गुरयं ॥
जो फल लग्यौ पल्लू ॥
तो कालं रिष सो वरयं ॥ ५७ ॥

दूहा ॥

इय चिंतय रिषि राज गुर ॥
पुछिय अन रिषराज ॥
क्यौं उधार होइ आष बर ॥
कहो क्रपा करि आज ॥ ५८ ॥

कवित्त ॥

मद भंडी इक पुरष ॥
निसा भद्दव अधरत्ती ॥
वरंगना अंगनें ॥
डस्यौ अहि परत धरती ॥
सुरापान आमिष्ष ॥
गयो करहुं तवि छुट्टिय ॥

---

* राज हु B.

उच्चारत हा राम* ॥
जाय वैकुंठ सु ठट्टिय ॥
परताप नाम सद् गति भइय ॥
कीर कहत परिषत्त सम ॥
भागवत्त सुनहि जोइ क्वचित ॥
तो सराप छुट्टय अक्रम ॥ ५९ ॥
जदि न स्राप तुहि भयैा ॥
तदि न परिसोक घर घर ॥
पसु पंषि जल छंडि ॥
छंडि मुनि वर समाधि उर ॥
छंडि चक्र हरि रषि ॥
क्रूष तूं मात परीषत ॥
पंडव वंस प्रतष्य† ॥
तषत ध्रम्म धारी दिष्षत ॥
अचरिज्ज कहा तुम उद्धरन ॥
होइ प्रसन्न सुकदेव कहि ॥
दिन सत्त अवधि अंतर बहुत ॥
हरि सु उद्धरै छिनक महि ॥ ६० ॥

---

* This and the next time are not in B.　　† प्रतषि B.

धरनि रूप करि धेन ॥
भ्रम बछरा संग लियै ॥
झारषंड महि चरत ॥
देषि कलि जुग कुपि हियै ॥
चरन तीन भज्जंत ॥
प्रजा सब आय पुकारिय ॥
चढि करि तें न्टपराज ॥
बष्ष्य* परिताहि वछारिय ॥
किहि कीर अंग लग्गौ परस ॥
तिहि कारन इह ऊपजीय ॥
आषेंट जाय पन्नग म्रतक ॥
सिंगी गर घतिय षिज्जिय ॥ ६१ ॥

छंद चोटक ॥

इति चोटछंद सुमंत गुरं ॥
दिन सात पब्यौ हरि गंग कुरं ॥
क्रित पत्त छिमा पिवुलाइ भरं ॥
ब्रितकाल विकालह चित्तधरं ॥
न्रिपराज परीछत तत्त गुरं ॥
धरि ध्यान कह्यौ बदलीष धरं ॥

* बष्य B.

इन काल सु तप्पय देव नरं ॥
न्टन ग्यान सुन्यौ वपु व्यास वरं ॥ ६२ ॥

साटक ॥

या विद्या बदलीत राजन गुरु आपो रिषं तारयं ॥
शून्यं राज सु इंद्र धारन धरं विद्या अमारा पुरं ॥
ग्रभ्योयं सुघनं तु मातुलं इयं मोहं हरि तारयं ॥
मो ध्यान रिषि राज राजं वरं पापापहारं परं ॥ ६३ ॥

चंद्रायना ॥

अति किसलय सु सकोमल अंग ॥
जानु कि मुक्किय देहीय* अंग ॥
किस्ना दीपायन दीपन व्यास ॥
कोपिन एकि न मंडल चास ॥ ६४ ॥

दूहा ॥

किसनदीप दीपायनह ॥
कही रषी सब बत ॥
जु कछु सराप सु† उधर्यौ ॥
परन राज गुरु आगत्त‡ ॥

कवित्त ॥

तितै आई वर ब्रह्म ॥
अप्प रिषि रिषि सु पुकारं ॥

* देही अयंग B. † ज. B. ‡ B omits आ।

कैं तछक न्टप हतहु ॥
न तरु तछक मरै धारं ॥
उभय चित्त चिंतयौ ॥
भई श्री नाग सु मान ॥
न्टप न हतों तो मरन ॥
अहित न्टप रिष्य निधान ॥
दुअ भंति चित्त चिंता सुचित ॥
धरि ध्यान चित ध्यान जिय ॥
सत विप्प आइ लिय बोर बर ॥
आइ हथ्य राजन सु दिय ॥ ६५ ॥
दिय हथ्थें मधि कीट सुफल ॥
छोइ राजन धारिय ॥
क्रम लंछन लागंत ॥
निकरि कीटं क्रित कारिय ॥
छिनक मधि बाढंत ॥
भरा फुनि पंचनि नारिय ॥
न्टपति हुकम मुष दियौ ॥
करो सो* काम कारिय ॥
फिरि आइ राइ दिष्ट वचिय ॥

* B omits सो

क्रम्म मद्धि डसनह फनिय ॥
जं जाइ जीह कलि हंस छत ॥
भईये देह ब्रन अप्पनिय ॥ ६६ ॥
तब जनमजेय पुत्त ॥
दिसा दछिन जनमु किय ॥
तहां धन अंतरवेद ॥
दरक चढि लैन सुत किय ॥
करिय षेद चलि अप्प ॥
सहस चेला संग धारिय ॥
आस्तीक धुर नाम ॥
तब सु तछ्यक बिचारिय ॥
छलत कि रूप लकुटी भईय ॥
ग्रहिय गुरु पुड्डें* डसिय ॥
भष काज सिष्य सिष्या दइह ॥
विप्र रूप तछक हसिय ॥ ६७ ॥

दूहा ॥
आस्तीक गुर वैर कजि ॥ पढि विद्या ग्रह नाग ॥
जनमेजै न्रिप सों मिलिय ॥ मंड्यौ अप्पन जाग ॥ ६८ ॥

---

* B. पुड्डें ।

F

कवित्त ॥

तिहित बैर सिसु बरस ॥
पत विप्पं बोलि सचारब ॥
न्टप जनमेजय नाम ॥
भयौ तामस उत गारब ॥
तात बैर सिसु रष्षि ॥
जियन सोइ खोइ विचारै ॥
जानिलु बात नहरिय ॥
मछ बंध्यौ जनु जारै ॥
होम मंत सक्ति तछक सु नग ॥
इंद्र सरन पतौ तबै ॥
सुनि कर्न राज तामस भयौ ॥
करहु मंच साधन सवै ॥ ६९ ॥

चंद्रायना ॥*

करि† अस्तुति स्वाहा इंद्र जोगं ॥
तहां इंद्र आयौ सुरं नाग भोगं ॥
इतं देव सादेव सारन आयौ ॥
तिन काढि दीयंत सह पाप पायौ ॥ ७० ॥

---

* B adds छंद भुजंगी ॥ † करी B.

कवित्त ॥

अभय दान आतुरह* ॥
अन उग्राह पान दत ॥
सरन रष्षि भय नरन ॥
कढि मु कहित छंडि सत ॥
तुय लग्गि कग्ग कराल ॥
स्वान मंसन उ वासै ॥
रुधिर चरम अरु असति ॥
बस्त बस्तन उं नासै ॥
जोइयै जोइ जग उब्बरै ॥
जननि जाय ग्रभह गरै ॥
तिन कारज राज प्रार्थिय ॥
जियत तछक तन उबरै ॥ ७१ ॥

दूहा ॥

नृप चिंता बहु लग्गि मन ॥
ज्यौं जूथ वाय चिन काल ॥
यौं नृप राजत राजकुल ॥
पुनरजनम दुष ज्वाल ॥ ७२ ॥

---

* है B.

कवित्त ॥

सो तछक आबू प्रमान ॥
मंड्यौ सु अचल करि ॥
गरब गहर तें बिडुरि ॥
सुडरु रष्यौ जु मंत धुर ॥
अचल ईस प्रति ताम ॥
अचल आ चित अचल बर ॥
देव देव प्रारथ्थि ॥
इंद्र मुक्किय छडीय धर ॥
अरबुद नाम धर जुतिया ॥
दूर तष्यित थहराइया ॥
कल पान पुहप अरु बस्त गुरु ॥
छांह गुरु गुर छाईया ॥ ७३ ॥

दूहा ॥

सो आबू उद्धार विधि ॥
कहों कथा परबंध ॥
ज्यौं अनादिआ रिष्य मुष ॥
सुनी सु गुर समबंध ॥ ७४ ॥
गुरु गालब उतंग सिष ॥

बहु विद्या पढि जास* ॥
पय लग्गौ गुर राज कैं ॥
कह्यौ दछ्छना काम ॥ ७५ ॥

छंद वाघा ॥

गालब रिषि सिष्य उतंग ॥
दिय विद्या बुध क्रम क्रम अंग ॥
गुर दछ्छिन कज्जैं गुर जच्चै ॥
गुरपतनी तब मंगि विरच्चै ॥
कुंडल जच्चि षिचिया कान ॥
अप्यौ जासु दक्षिना दान ॥
दिवस अट्ठमो व्रत अषंडे ॥
चरचों दान विप्र श्रुत मंडे ॥
चल्यौ रिष्यि चमके ताम ॥
गुर गुरनी कों करे प्रनाम ॥
चिंतत इष्ट चल्यौ बर राहं ॥
संपतो यों सद न्रिप ठाहं ॥
जच्चै कुंडल षिचिय पासं ॥
सोइ समप्यै विधि बर तासं ॥
विप्र प्रसंसे समपे कुंडल ॥

* So B and T. but A has जाम which rhymes while the other reading does not.

कहि डर तक्षक वीच नीच षल ॥
लै कुंडल चल्यौ हरषे मन ॥
आप्यौ राज विप्र अन्यो अन ॥
क्रम्यौ विप्र राह चंचल चर ॥
छलि तछक लीनें कुंडल वर ॥ ७६ ॥
क्रमयौ विप्र पुट्ठि अति चंचल* ॥
धरि अहि रूप सु गयौ रसातल ॥
विल डूषे ठड्डौ रिषि ताम ॥
दुमन चिंत भय विह्त विराम ॥
अस्तुति इंद्र करन लग्गौ रिषि ॥
नंष्यौ वासव षिनक वज्र सिष ॥
व्रित अभ्रित दियौ आषंडल ॥
धर रिषि तक्कि षात विल मंडल ॥
पेठौ विप्र नागपुर ठाम ॥
धाम प्रगट्टे मंच विराम ॥
दूष्यौ पुरुष एक घट आरं ॥
फेरै चक्र तास फिरि तारं ॥
दूष्यौ वाह वाह सत वारं ॥
उंच तेज आजेज अपारं ॥

---

* अंचल B.

यैं नर नारि अषे वर नामं॥
वे अह हथ्थ वे ईस मकामं॥
चिसत सट्ठि ता तंति ठायं॥
अद्ध सेत स्याम अध तायं॥
अहि धुते न उपाइ सबाहं॥
फुंकत पुंछ सधुम्म सराहं॥
फुंकत पुंछ धार धुस चल्ली॥
लग्गै नाग अंग सह थल्ली॥
प्रगटे अंह्र पलक उध धति॥
अप्पै कुंड नाग मान हति॥
ग्रिह कुंडल अप्पे गुर वामं॥
गुर विद्या अप्पी अभिरामं॥
दुज वर वज्ज पैठ जेहा धर॥
विल आश्रित* तिह थान मंडि थिर॥ ७७॥

दूहा॥

विल अथाह तिहि थान भय॥
वहुत संवछ्छर वित॥
प्रथुल कराल कराल भौ॥
जिम जिम काल बितित॥ ७८॥

* A. and B. आभेत।

छंद पद्धरि ॥

किहि समय ताम वाचिष्ट रिष्य ॥
धर अटन करत सम आइ सिष्य ॥
सिव पुरिस सोभ सारन ब्रन्न ॥
सुभ थान इष्य आमोद मन्न ॥
बर इष्षि ठाम विस्राम ताम ॥
अनेक रिष्षि किय तह्व विस्राम ॥
तिहि समय चरंतिय होम धेन ॥
सामीप समंपो विलह तेन ॥
अध इष्षि इषि भ्रमेव गाव ॥
मुछेव परिय मझि विल अथाव ॥
हुअ होम काल आव्रीत* धेन ॥
चित्तै सु रिष्षि कारन्न केन ॥
वल जप्प लह्यौ गोपात थान ॥
तहां गयौ रिष्षि सिष्यह समान ॥
उतकंठ विलह ठट्टौ सु रिष्षि ॥
नंदिनिय नाम कहि सदिति† सिष्षि ॥
क्रनेव गाव संपत्त बच्च ॥
संभार‡ कियौ सुर उच्च तच्च ॥

---

* व्रीन. B. श्राव्रीन. A.   † सदति B.   ‡ हंभार A.

सुन्ने वचन सावछ्ध भ्रम ॥
चित्तै सु रष्षि निरक्कास क्रम ॥ ७९ ॥

दूहा ॥

चिंत अनेक ह विधि विवर ॥
विल नंदिनी निकास ॥
मंच रूष गंगा तवन ॥
लगो करन रिष तास ॥ ८० ॥

छंद भुजंगी ॥

नमो देव गंगे जयो मात गंगे ॥
द्रवै रूषका मंडलं ब्रह्म संगे ॥
चयं पथ्थ चेयं गुनं ते निवासं ॥
वरं वृंद वृंदारका सेव जासं ॥
हिमं सैल भेदे सु भेदे धरायं ॥
सजे रूप कायं सुरायं नरायं ॥
मधू छेदनं पाय प्रावेस कारी ॥
सतं मुष सामुष सामुद्र धारी ॥
हली सेत झल्ली जलद्धी समुद्दं ॥
अचै सेष षीरं सुमानैा समुद्दं ॥
धरा चल्ली* भागीरथी विश्वभागं ॥

---

* चल्लि B.

मिटै अघ्घ ओघं तनं दुष्ष दागं ॥
सुभं उच्च अंदोल वीचं विराजं ॥
मनो स्तुग्ग आरोह सोपान साजं ॥
नरं नीर नीचं तटं स्रोन प्रम्मं ॥
तबै अग्ग देवं गुनं अब्ब अम्मं ॥
परै मझ्झ कलेवरं धंषि छुट्टी ॥
भषी कावलं गिद्धि गोमाय लुट्टी ॥
तटं स्रोन झल्लै थलं वारि हल्लै ॥
षिनं मधि अंदोल वीचिव हल्लै ॥
तिनं आतमं देह आनूप धारै ॥
बरं उर्वसी चामरं बिंझ नारै ॥
धरै ध्यान भावं तिनं दुष्ष दव्वै ॥
मिटै मज्जनं अपसा जम सव्वै ॥
झलक्कंत गंगा तनं तेज सोहै ॥
मनो दाहनं दाहं दाहनं जोहै ॥
सुयं गंग गंगे सु गंगा प्रकारं ॥
हरै नाम गंगा जमं किं करारं ॥
त्रिपंथी त्रिगामी विराजंत गंगा ॥
महास्वग लोकं नरं नाग* मंगा ॥

* ताम B.

रहट्टं घरी ज्यों फिरै तीन लोकं ॥
महादिव्य धुन्नी नवं निगम लोकं ॥
कला की गुहीरं गुफा फारि नागं ॥
प्रगट्टीय मातंगि मानुष्य भागं ॥
रही नष्य अष्षी सुयं ताप भंजै ॥
महावहराजं दिवं दुग्ग रंजै ॥
भयं भीषम मात पुह पाप षंडै ॥
जमं ज्वाल जालं तमं तेज चंडै ॥
रहं रोह रंगी हरं सीस गंगे ॥
महामोहिनी मात दुर्गं उतंगे ॥
बरं काल काला जलं स्वेत रूपं ॥
तहां उप्पनी मात आभंग अनूपं ॥
भई गाम सहं सु सामुह मेतं ॥
धयौं नाम गंगा उतंगा विहेतं ॥
हरद्वार द्वारं कला तूं प्रगट्टी ॥
करी मुक्ति मग्गं महापाप मट्टी ॥
तिनं नाम लीनै कियं तोय पीजै ॥
कियं समरनं देव संज्ञ्यान कीजै ॥
कियौ गाहि तें पंथ उग्गाहि साजं ॥
तुंही तापिनी तेज तूं तेज राजं ॥

तुंही मध्य वारानसी मोछ* दैनी ॥
कली काल दुषन्न काटन्न क्रपेनो ॥ ८१ ॥

दूहा ॥

जब लगि रज तन मात की ॥
रहै अंग सोलाइ ॥
तब लगि काल न संपजै ॥
क्रम्म पाप सब जाइ ॥ ८२ ॥

गाथा ॥ †

क्रम अघं सब भंजै ॥
दिव्यं करै देह सारूपं ॥
सुरगं‡ करै सुगामी ॥
अद्वं नाम रसन उच्चारं ॥ ८३ ॥

दूहा ॥

सुनि गंगा सुबयन रिष ॥
उभरी आय प्रमान ॥
ताहि तिरंत नंदिनी ॥
आई तट विल यान ॥ ८४ ॥
रिष्ष सिष्ष धाए सु सब ॥
धर कढी तहां गाव ॥

---

* मोच्च. B. † B omits this. ‡ सुरंग B but wrongly ; सुरगं = स्वर्गं seems correct.

सो कढवि मंदाकिनी ॥
गई पयाल फिरि ठांव ॥ ८५ ॥
विल अथाह दिष्यौ सु रिष॥
चित चिंता परयत* ॥
को निकसै या मधि गत॥
गात भयानक षत ॥ ८६ ॥

छंद विअष्परी ॥

चिते रिषि देषि बिल †दुक्रित ॥
उर लग्गी अति चिंत मझि हित ॥
पुछवि रिष्य सिष्य क्रत कामं ॥
लहै न कोइ बुद्धि बल तामं ॥
चिंतै ध्यान अप्प रिषि राजं ॥
याहि संपूरन को थिर काजं ॥
चिंतत रिषि ध्यान उर भासं‡ ॥
है सत पुच हेमगिरि जासं ॥
पुच एक जाचों तिन पासं ॥
बिल पूरैं पूरं उर आसं ॥
क्रम्यौ राजरिषि दिसि उतर ॥

---

* परपत B. † दुक्रत A. T. ‡ नासं A which gives no good sense.

देषी मन आनन्द दिव्य धर ॥
गै रिषिराज पास गिरिराजं ॥
इष्षे अग पति आसन साजं ॥
मेना सहित आय पय लग्गे ॥
अरघ पाद करि अचवन लग्गे ॥ ८७ ॥

दूहा ॥

सुनि सु वचन गिरिराज कौ ॥
कहि रिषि कारन षात ॥
पुत्र एक जच्चूं तुमहि ॥
गरित सपूरन गात ॥ ८८ ॥

कवित्त ॥

तब सु चिंत गिर इसं ॥
पुत्र सहे निज सब्बं ॥
कहि कारन षिति षात ॥
अप्प रषी कुल अब्बं ॥
इह सु रिषि सुत ब्रह्म ॥
नाम वाचिष्ट महामति ॥
धर्म पार तप पार ॥
पार श्रुत कर्म परमगति ॥
जच्चै सु सोइ तुम एक कहुं ॥

चिंति काज कारज रिषि ॥
संवसो वास विल उद्धरी ॥
पाद पामैा परमुच अषि ॥ ८९ ॥
तब अष्षहि अग्र पुत ॥
सुनहु गिरिराज चिंत चित ॥
पिता बाच रिष काज ॥
कोइ छंडहि सुक्रम हित ॥
उह सु भूमि निषेद ॥
थान जानहु तुम सब्ब ॥
भ्रम क्रम अरु देव ॥
सेव जाजन नहि अब्ब ॥
कुच्छित्त देस कारन विक्रम ॥
कहां सु केम किज्जै गमन ॥
अप्पियै प्रान मग्गै जो रिषि ॥
पें दुष्ट थान थप्पहि न तन ॥ ९० ॥
तब जंपै सुअ ब्रह्म ॥
सुनैा गिरिराज पुच सम ॥
इहि सु भोमि बिल थान ॥
रम्य मंडहि सु तप्प हम* ॥

* Probably for होम shortened for the sake of the rhyme.

सबै देव इहि वास ॥
तिथ सब्बै रिषि सब्बं ॥
विप्र वृक्ष बर वल्लि ॥
सुगुन गंधर्व सव कब्बं ॥
किन्नरह क्रम सुत धर्म धर ॥
मुर्तिमान सज्जै तिसिर ॥
हरि ब्रह्म ईस संवास सह ॥
जो आश्र महि इक गिर ॥

छंद पद्धरी ॥

रमनीक ठाम बाचिष्ट राज ॥
तहां बसहि देव देवह विराज ॥
इह थान पुब्ब क्रत युग प्रमान ॥
रिषि कियौ तप्प जर्जित विधान ॥
वाल्मीक बीर इक बधिक रूप ॥
अति पाप आघात कूप ॥
भंजै सुमग्ग तिन धर्म थान ॥
पायौ सु हरिय दर्सन विधान ॥
चित संष चक्र गद पद्म बाहु ॥
तन स्याम सुभित पीतह प्रवाह ॥
दिष्यौ जु लछी तन रूप भील ॥

कीनी नह तन तिन निमष ढील ॥
आयौ सु दिट्ठ गोबिंद बीर ॥
जानी न पुब्ब धरमह सरीर ॥
छिति दिष्षि दिट्ठ कामह करूर ॥
बिंढ्यौ सु पाप मथांस भूर ॥
तब आय रिषि उपदेस दीन ॥
किहि काज इहां* यह क्रम कीन ॥
भग्नी रु बंध त्रिय मात पुत ॥
बंटहि कि पाप पापह संजुत ॥
तिहि जाय कह्यौ बर भील मान ॥
बंट्यौ न पाप किन अंग थान ॥
लग्यौ चरन कर धनुष तोरि† ॥
आघात घात बानी स जोरि ॥
व्याघात नाम सों बधिक थान ॥
भ्रम भ्रम्यो इक वृछ निधान‡ ॥ ९२ ॥

गाथा ॥

यों कहियं रिषि राजं ॥
तुम कोइ दिवस भ्रमन करि अथ्थं ॥
फुनि हम दरसन प्रमं ॥

---

* इह्यां B. † तोरी. B. ‡ This line is omitted in T.

ससथ्थ गुरु मंच दे कानं ॥ ९३ ॥
मरां मरां यह कहियं ॥
गहिय भगताय अंगयं नेहं ॥
भई तु चक्रम मंटी ॥
दट्टी निय अब यो देहं ॥ ९४ ॥

दूहा ॥

बांबी फिर अंगह वली ॥
अंग उदै ही जाम ॥
झीन सबद मुष निकसै ॥
धीर धीर कैं राम ॥ ९५ ॥
तब धरि मधि कढ्यौ सु रिषि ॥
दिषि प्रबल तप पार ॥
बालमीक रिषि सो भयौ ॥
सुनि गिरि सुअन बिचार ॥ ९६ ॥

कवित्त ॥

सुनि सु बचन गिरि सुअन ॥
सर्व विधि राम वाच रहि ॥
मध्य पुच गिरि* नंद ॥
सोइ उच्चयौ बाच सहि ॥

---

* त्रिगिरि B. evidently a mistake.

हौं सु पंग बिन पाइ॥
क्रमि सकौं न राह दुर॥
जाय परौं षित षात॥
करौं उद्धार बाच धुर॥
पित बाच सज्यौ सुबन॥
बाच सुहरि चंद अब बहि॥
सोइ बाच तात क्रत कज्ज रिषि॥
कोइ स चुक्कहि मुष महि॥ ९७॥

छंद पद्धरी॥

अर्बुदा सचल अर्बुद्द नाम॥
क्रत काम पयह पोरौ सु कास॥
धर नंद नंद नंदन प्रमान॥
उच्चार सार लै जाहु थान॥
रुंधी सु गाय बन* व्याघ्र क्रोध॥
आयौ सु राज राजन समोध॥
कुरु लाय करिय करुना† सु धेन॥
छंडाय राज राजन वखेन॥
तन धरिग कर्यौं जज्जर सरीर॥
दिष्यौ न सिंघ तहां निमष तीर॥

---

* बिन. B.   † कुरु नाहु. B.

सुप्रसन्न गाय धनेक सु रिषि ॥
किनौं जु अंग द्रप्यक* विसिष ॥
यन यान दिषि अर्बुदा राज ॥
रिष कहै जो गहूं चलन साज ॥ ९८ ॥

कवित्त ॥

तब तबि अर्बुद नाग ॥
मिच गिरि नंद हित हिय ॥
हौं उद्धरि लै जाउं ॥
तिथ्थ मो नाम† नाम दिय ॥
तब नंदी उच्चर्यौ ॥
हैं हितो नाम तिथ्थ हित ॥
सु रष्षि कज्ज सुद्ध रहि ॥
सुरनि उद्ध रहि वाच पित ॥
यप्पी सु बत अर्बुद उरग ॥
सुरनि सीस नंषे सुमन ॥
धय परसि मात पित बंध व्रग ॥
सुभ्र सु हेम कीनो गमन ॥ ९९ ॥

---

* द्रप्पक B. † The last half of this line and the whole of the three following lines are omitted from B, apparently by an error of the copyist.

तब निय अर्बुद नाग ॥
कंध उद्वयौ नंदि नग* ॥
मग्ग अग्गा गिरिराज ॥
रिषि संचर्यौ सथ्य अग्ग ॥
साध सिध सुर सुरह ॥
सुमन नंषे उच्चरि सह ॥
रिषि अग्गै गिरि पछ ॥
आय संपत तथ षह ॥
प्रावेस कियौ गारत्त गिरि ॥
जय जय बचन सरीर हुअ ॥
भै मंगन सुतन सब्वै सुगिरि ॥
उबर्यौ नाक सु नाग धुअ ॥ १०० ॥

दूहा ॥

उबर्यौ नाक सु नाग धुअ ॥
दिव अस्तुति परमान ॥
पुहप वृष्टि हथ्थां करिय ॥
जय जय बंध्यौ तान ॥ १०१ ॥
गात सकल गिरिजात कौ ॥
सब बुड्यौ सम नाग ॥

---

* नन्दिग. T.

उबरी नास सैल तहां ॥
सोह लही बिन लाग ॥ १०२ ॥
नास सु हलहल्यौ सुनग ॥
उर अति चिंता जग्ग ॥
अति आतुर वाचिष्ट रिषि ॥
ईस आराधन लग्ग ॥ १०३ ॥

साटक ॥

ईसंजागिरिजाननेवगरयं उछंगमातंगिनी ॥
चर्मेजावद्दजामवंतजलज*बुंदंतयं उज्जलं ॥
रष्यंजारतिकरनकामतिमलंदलयंति तीयंपुरं ॥
चिपुरारिंतनतुंगतारनगुरं जै जै हरं ईसयं ॥१०४॥

छंद भुजंगी ॥

नमो आदि नाथं स्वंभू समाथं ॥
नही मात तातं नको मंगि† वातं ॥
जटा जूटयं सेषरं चंद्रभालं ॥
उर हार उद्दारयं रुंडमालं ॥
अनीलं असनं उपंबीत राजं ॥
कलंकालकूटं करं सूलसाजं ॥
वर अंग आधून विभूत आपं ॥

---

* दं B. † मंगी B.

प्रलै कोटि उग्रं सिकाल अनोपं॥
करि चर्म कंधं हरी पारिधानं॥
वृषवाहनं वासं कैलास थानं॥
उमा अंग वामं सुकामं पुरष्षं* ॥
सिरं गंगा नैनं† त्रयं पंच मुष्षं ॥
नमः संभवायं सरव्वाय पायं॥
नमो रुद्रयायं वरहाय सायं॥
पसू पत ए नित ए मुग्ग जाए॥
कपर्द्दी‡ महादेव भीमं भवाए॥
मषंघ्नाय ईसं नए त्रबंकाए॥
नमो भ्रम्म ए धात ए अद्धकाए॥
कुमारो गुर्वं नमोा नल ग्रीवे॥
नमो व्याध ए वाध ए द्रिछ जीवे॥
नमो लोहिते नील सिष्षंड एतं॥
नमो शूलिने चक्षुषे दिव्य एतं॥
बहूदेतवे§ सवदेवं स्तुतेवं॥
नमो पिंग जाटिह्लए देव देवं॥
नमो तप्पमानाय ब्रषंघ|| जाए॥

---

* कु A and B. † नैत्रं B. ‡ कर्पद्दी B. § रे B. || घु B.

नमो ब्रह्मचारी चयब्रह्म काए ॥
सिवं चातमे चातगे स्वर्ग चाए ॥
नमो विश्वमा वित्तए विश्वराए ॥
नमस ते नमस ते नमो सीत ताए ॥
नमो सर्वंवक्त्रायने संकराए ॥
नमो ब्रह्मवक्त्राय भूतं पिताए ॥
नमो वाचपे विश्वपे भूतपाए ॥
नमो सीस साहस्त्र एनीत एसं ॥
सहस्त्र भुजा नैन सहस्त्र तेसं ॥
नमो पाद साहस्त्र आसंष कर्न्नै ॥
नमो वह्नि हिरन्य हीरन्य वर्न्नै ॥
नमो भक्ति आकंपनं संभ देवं ॥
थिरं रिद्धि दाता मनं वच सेवं ॥
प्रसन्नो भवो ईस तब्बै न कब्बै ॥
तनं ताप विनास ए चित तब्बै ॥ १०५ ॥

चौपाई ॥

सुनि मुनि वचन मोद मन ईसं ॥
आय घरौ रह्यौ उद्धरि सीसं ॥
बरबर बानि जानि मंगहुं ॥
जपंहि ईस आस जिहि जग्गहुं ॥ १०६ ॥

मंगहु मुनि सज्जन गुन गुन बर ॥
चलै ई किति जिति जिहि धुर धुर* ॥
ता कीतो मुक्तीह सें लीजै ॥
ब्रह्मासन आसन डोलिज्जै † ॥
देषि सरूप ईस मन उंमद्दि ॥
जै जै जीह धन्य बानी बद्दि ॥
गौरक पूर तेज तन उद्दित ॥
रिषि रोमंचित तब मन मुद्दित ॥ १०७ ॥
मुद्दित मन उद्दित तन भारी ॥
हरि बैकुंठ ईस मनचारी ॥
अर्बुद गिरि धरि ध्यान सु ईसं ॥
करै काल तिहि काल जगीसं ॥ १०८ ॥

साटक ॥

त्रैनेंनं त्रिजटेवसीस त्रितयं त्रैरूप त्रीस्थलयं ॥
त्रैदेवं त्रिदिसा त्रिभू त्रिगुनयं त्रिसंध वेदत्रयं ॥
त्रैरग्निं त्रयलच्छिकाल त्रितयंग्राम त्रयं त्रैवयं ॥
गंगात्रै त्रिपुरारि भासित तनं सोयं नमः संभवे ॥१०९॥

---

* धर A. † डां. B.

दूहा ॥

आनंद्यौ प्रमथाधिपति ॥
बर बर बंद्यौ बानी ॥
रिषि मंगहु उतकंठ मन ॥
सोइ समप्पों आनि ॥ ११० ॥
फिरि रिषि जंप्यौ संभु मों ॥
जौ तुट्ठौ मुझ भास ॥
भग्ग चलंतौ अचल करि ॥
फुनि सज्जौ सिर षास ॥ १११ ॥
सो आबू गिरि राज गुरं ॥
मेर सम लसैं लास ॥
चिपथ ताप सुनि देव का ॥
वसि रुकियौ कैलास ॥ ११२ ॥

कवित्त ॥

तब सु ईस मन मुदित ॥
पानि चंप्यौ गिर गौरव ॥
अच अचल कहि अचल ॥
भयौ अचलेस नाम तव ॥
सुथिर भयौ नग नंदि ॥
अप्प सिर वास सु सज्यौ ॥

उमय आय तिहि थान ॥
सगन प्रमथाधिप रंज्यौ ॥
गिरि नंद नाम हेमह सुतन ॥
अर्बुद नाग सुमित्र नम ॥
तिहि नाम त्रिविध भय तिय हर ॥
पारस अप्पन अर्थ तन ॥ ११३ ॥
अचल नाम कहि अचल ॥
अचल विद्या अभ्यासिय ॥
अर्बुद गिरि थिर धर्यौ ॥
बीयौ बानारस बासिय ॥
उह्हित नाम इक बरष ॥
मुक्ति लभ्यौ तिजगत गुर ॥
इहत नाम इक दीह ॥
करै उपवास सोइ नर ॥
वानार भंति बारानसीय ॥
आबू अर्बुद उद्धरीय ॥
जट विकट जाल विभ्भूति रंग ॥
सुरग मुति ढिग ढिग फिरिय ॥ ११४ ॥

छंद पद्धरि ॥

अग अचल दिषि वाचिष्ट रिष्ष ॥

मन मुदित भयौ सम आय सिष्य ॥
हर वासदेव सव गुन समान ॥
आवरन रिद्धि चित चिंत थान ॥
आभासि सिष्य गौतमह तथ्य ॥
आचरयौ वास अनि रिष्य सथ्थ ॥
आभासि रिष्य अनेक ताम ॥
संबोधि बोलि प्रथु प्रिथक नाम ॥
देवलह असित अंबा विद्धत्र ॥
सौमित्र सष्य माली विभूव ॥
मह महन सनक जैनेय पैल ॥
दालभ्य बक्क सुमंत ऐल ॥
दीपाय किस्त थूलं सिराय ॥
तैतरिय जग्य वक्री सु ताई ॥
जैमनीय ध्रुव वैसंपयान ॥
हर्षनह लोम असुहोच जान ॥
मंडव्य अरति कौसिक दाम ॥
उष्णीष चिवन पर्नादवाम ॥
घट जात सुबल मोजायनेय ॥
बल वाक परासर वाय वेय ॥
सचि वाक जात क्रन क्रनमाल ॥

सनि वाक क्रिताश्र सुचिपाल ॥
सिषि वांनस पर्पत पारिजात ॥
अगस्ति मारकंडे सुभाति ॥
पाविच पानि सर्वन्य रभ्य ॥
किरनाषकेत भ्रगु मेष सभ्य ॥
जंघाव भाल की कोप वेग ॥
गालं मचि रिय ब्रह्म भ्रगेग ॥
कोंडिन बंध माली सनक्क ॥
सानंद सनातन काष्ठ वक्क ॥
सांडिल करक वाराह पंग ॥
कौमार अश्व हय घोष मंग ॥
वेनी जय घन घना सकेत ॥
वह्नं कलाप वक्रोव सेत ॥
अष्टाह वक्रा उद्दाल केय ॥
च्यव नह कपिल मातंग जेय ॥
माधव्व गरग अनेक रिष्य ॥
आए सु अन्य तहां समह सिष्य ॥
आह्वान मंच बल तप्प सथ्थ ॥
सव देवरिष्य आए सु तथ्थ ॥
कलिंद्र गंग सरसति आय ॥

अनुसरिय बहु सबसीयताय ॥
ऊषधी सब मनि सब धात ॥
बर वृष्य लता फल पुहुप पात ॥
जाजन्य जजन अधिनय अध्याय* ॥
लगे सु करन रुचि रिष आय* ॥
आह्वान बान उचान जाप ॥
लगे सु करन रुचि इष्ट ताप ॥
जप होम मंच धारनाध्यान ॥
आरम्भ रिष्य लग्गे सु ग्यान ॥
आराधि सकति अभासि ताम ॥
संवास कीन गिर उंच धाम ॥
आदर सरिष संवास कीन ॥
आश्रम्म श्रब्ब क्रम्म काज चिह्न ॥
जगनह जाप अध्याय होम ॥
आराध उंच आयास धोम ॥
प्रीनंत देव सु वास आय ॥
सब लिखे वृंद वृंदार काय ॥
विसेष मंच जंच गुरेन ॥
बंधे जु मंच कर आप देन ॥

---

* B अध्याप in the first line and आप in the second.

करि भसम देव देवल लहीव ॥
विस्माह अम्रत पावै सु पीव ॥
अति धम्म क्रम्म दुष्षे अनंद ॥
आए सु निसाचर छलन मंद ॥
भररंत रिष्य मंगिय करूर ॥
तिन समत भूमि षह नाग नूर ॥
चित अचित पंच आभासि देह ॥
रस दुग्ध सही षुद्दा अछेह ॥
के भषें वाय के ध्यान देव ॥
जल दूध कंद मूलह सकेव ॥ ११५ ॥

गाहा ॥

कंदं फलानि फलयं ॥
कढंतं मुनिय कालवेकालं ॥
ए कोपि धार धरयं ॥
संतोषं सर्व निधानं ॥ ११६ ॥
संतोषं विनान लभ्भै ॥
कल पंतं राजनं सुष्षं ॥
जो संतोषं देहं ॥
तो सुखं इय मूल काम लया ॥ ११७ ॥

दूहा ॥

जंचकेत दानव दुसह ॥
अरु रष्षस धुम्रकेत ॥
अप्प सथ्थ लीने सकल ॥
आए दुष्टह हेत ॥ ११८ ॥

कवित्त ॥

आब्बू करि रिष्य जग्य ॥
मंच कारन सुमंच जप ॥
पंड हथ्थ बर उंड ॥
अष्ट अंगुल उर्द्ध वपु ॥
हथ्थ तीन अरु अर्द्ध ॥
मंडि चवकून समासम ॥
स्रप्प संमति सम कियौ ॥
फनति बचयौं देव क्रम्म ॥
अगि नेव थान अगि नेव धर ॥
बाइ कुंड दष्यिन दिसा ॥
नैरत निवर्त्त धज मंडिकै ॥
ब्रह्मक्रम्म लगे किसा ॥ ११९ ॥
पंच पर्व्व जग्यौपवीत ॥
पंच पर्व्वी अधिकारिय ॥

द्वो मुनि दुज राज ॥
वैस्य शूद्रह चितकारिय ॥
चर विडाल पशु म्लेछ ॥
क्रम्म चंडाल षंड करि ॥
इह प्रमान दस विधि सुक्रम्म ॥
जंग मंडे सुमंडि हरि ॥
दानव सुदुष्ट दुष्ट सुक्रम्म ॥
दुष्ट मूच वरिषा करै ॥
वसु मंस रुधिर नंषै सुजल ॥
कर्म विप्र समुह डरै ॥ १२० ॥
चैावेदी चैा विप्र ॥
गीत गायच मंच जप ॥
ता मंझैा घन विघन ॥
करै आरिष्ट असुर कुप ॥
कबक भूमि हल्लवै ॥
कबक पर्वत हल्लावै ॥
अग्नि व्रष्टि कब करै ॥
कबक बुल्लै बुल्लावै ॥
मोहिनी रूप कबहुक करै ॥
कबक सिंघ नद्दह करै ॥

तुष्णोक रहै गावै कबक ॥
वे हथ्थों तालह धरै ॥ १२१ ॥

दूहा ॥

दिष्षि दिष्षि मंडी सु रिध ॥
जग्गिन होमह जाप ॥
ताहि विरागन मन मुदित ॥
लग्गे सकल संताप ॥ १२२ ॥

छंद पद्धरी ॥

रज वृष्टि उपल चिन नंषि थान ॥
चासना बीर पहु लगिन यान ॥
रिष गये सब वाचिष्ट पास ॥
राष्यसन कह्यौ मंड्यौ विनास ॥
रिष राज दुष्ट बध चित आय ॥
छंड्यौ जजन बल मंच भाय ॥ १२३ ॥

कवित्त ॥

तब सु रिष बाचिष्ट ॥
कुंड रोचन रचिता महिं ॥
धरिया ध्यान जजि होम ॥
मध्यबदी सरसा महि ॥
तब प्रगट्यौ प्रतिहार ॥

राज तिन ठौर सुधारिय ॥
फुनि प्रगट्यौ चालुक्क ॥
ब्रह्म तिन चाल सुसारिय ॥
पांवार प्रगट्यौ बीर बर ॥
कह्यौ रिष्य पंमार धनु ॥
चय पुरुष जुद्ध कीनौ अतुल ॥
नह रष्षस षुट्टंत तनु ॥ १२४ ॥

छंद मलया ॥

कारनं जग्य बंभाननि मानयं ॥
रचियं कुंड खंडं थिरं थानयं ॥
आसनं दिव्य देवान आहवानयं ॥
आसुरं कीन उचिष्ट ऊथानयं ॥ १२५ ॥

दूहा ॥

जब बाचिष्टह जग्य कजि ॥
सजि कुंडह सुभ थान ॥
तब आसुर अन संकसे ॥
किय उचिष्ट उतान ॥ १२६ ॥

कवित्त ॥

तब चिंतिय बाचिष्ट ॥
एह आसुर अविचारिय ॥

जग्य जिष्ट उच्चिष्ट ॥
करै कातर क्रत हारिय ॥
सुरन अंस संग्रहे ॥
हवै न हव्यहु आवह ॥
सो उपाव संचियै ॥
जो याहि संवरै असुर सह ॥
न्रिम्म्यौ सु स्रूर संयाम भर ॥
अरि अलंघ षंडं सु षल ॥
समं धरहि जग्य कारन सकल ॥
विमल सिष्ट सोभै सयल ॥ १२७ ॥

अरिल्ल ॥

अघट घाट रिषि ईषि निसाचरं ॥
परसि च्यार धरि ध्यान ग्यान बरं ॥
चिंतिय ब्रह्मकरम किहि कामह ॥
भयो रूप रिषि ब्रह्म सु तामह ॥ १२८ ॥

कवित ॥

अनलकुंड किय अनल ॥
सजि उपगार सार सुर ॥
कमलासन आसनह ॥
मंडि जग्योपवीत जुरि ॥

चतुरानन स्तुति सद्द ॥
मंच उच्चार सार किय ॥
सु करि कमंडल वारि ॥
जुजित आह्वान थान दिय ॥
जाजनि पानि अव अहुति जजि ॥
भजि सु दुष्ट आह्वान करि ॥
उपज्यौ अनल चाहुवान तब ॥
चव सु बाहु असि बाह धरि ॥ १२९ ॥

दूहा ॥

भुज प्रचंड चव च्यार मुख ॥
रत ब्रन तन तुंग ॥
अनल कुंड उपज्यौ अनल ॥
चाहुवान चतुरंग ॥ १३० ॥

छंद वाघा ॥

उपज्यौ अनल अनूपम रूप ॥
नहि आकृति अवर न रूप ॥
ब्रन अभूत सु उनत जिष्टं ॥
वंदन भर कि बद्दम तुपिष्टं ॥
स्याम रोम कपोल विसालं ॥
उनित कंध छतिय दुसालं ॥

लाल माल सोभै उर सोभं ॥
प्रथु प्राकुष्ट दिछ कर दोभं ॥
नयन प्रथुल भ्रुकुटी सुकरूरं ॥
मुष आकृति बालहर नूरं ॥
कवच चोन उर चान सरीसं ॥
दल आकृति भयानक दीसं ॥
तोन पूरि सर बद्धि सु कासं ॥
धरिय पान सरि बीर बिरासं ॥
षेटक षग्ग उनंगी धारं ॥
चाहि बान दिष्यौ रिष सारं ॥
चाहि आइ रिषि आइ समंगे ॥
चाहुआन कहि सह सुरंगे ॥
समरी सकति रिष्पि गिरवासी ॥
दीय सहाय जुद्ध कजि तासी ॥
आई सकति सिंघ आरोही ॥
द्वादस भुजा सु आयुद्ध सोही ॥
षेटक षग्ग बरहह पासं ॥
घंटा बान क्रती सिर आसं ॥
षप्पर सकति स्रूल मदपाचं ॥
देषे रूप क्रम क्रम छाचं ॥

आसा पूरि कहै रिषि राजं ॥
चाहुवान मंडौ क्रत काजं ॥
चाली सकति सहाइ अनलं ॥
चल्ले सूर सबै कसि बल्लं ॥
सब आए चढि रष्षस ठानं ॥
मंड्यौ जुड्ड सबै असमानं ॥
बाहै आवधि सकती सारं ॥
धड आवटि पडै धर भारं ॥
सड्डे धुंमकेत सकतिय ॥
जंचकेत चहुबान सुहतिय ॥
अध सु रष्षस दानव सड्डे ॥
गए रसातल नट्ठे अड्डे ॥
देवी आइ अनलह पास ॥
जंपी तथ्थ प्रसन्नी तास ॥
आसापूर कहै मो नामं ॥
पुज्जै पुच पौच परिनामं ॥
कुलह गोच मुझ थप्पे नाम ॥
अप्पों रिड्डि अचलह ताम ॥
धर्यैा सिर लैकर चाहुवान ॥
व्रधहु वंस अंस जस मान ॥

जीति अप्प देवी चहुवान ॥
दिय बर दान गई असमान ॥
गई असमान कियौ सद भारी ॥
धुं धुं कार जै जया सारी ॥
हेहै करि हंहं चहुवानं ॥
अनल कुंड उपज्जि परिमानं ॥
चैामुष्यौ चोवेद प्रकारं ॥
अैसो मुष देष्यौ अधिकारं ॥
वेदं स्याम अथर्वन रूपं ॥
रिगु जिजु वेद देव गुननूपं ॥
चित चमकार चिह्न दिसि लग्गिय ॥
पढ्य ताहि व्रह मंड सु जग्गिय ॥
बानी धुनि मुनि हरषिव सीसं ॥
बर बचिष्ट तहां दई असीसं ॥
तोहि वंस होइ कुंडल धारी ॥
जनु कि अर्क राका विस्तारी ॥
थुति करि सेव देव तिहि पानं ॥
जै जै तप्प जिते चहुवानं ॥
पर हरि बीर बीर नरकेकं ॥
तिहि चालुक्य भयैा गुनमेकं ॥

परहरि बर पावार तिवारं ॥
क्रोध रूप जाजुल्य निधारं ॥
जाजुलति पारहारन दिष्यौ ॥
षिजि करि विप्र पैारि तहं रष्यौ ॥
तिन कारन वाचिष्ट रषीसं ॥
अर्बुद नाम गिरिनंद जगीसं ॥
ता उपर दुरवासा आए ॥
दै सराप वाचिष्ट पठाए ॥
अब वे दानव दुष्ट सु दाषै ॥
तो रष्य चव कुली सु राषै ॥
वंस छत्तीस गति जै भारी ॥
च्यार कुली कुल तिन अधिकारी ॥
सब सु जात जोतो मग दिष्षिय ॥
ए ब्रह्मा अविसेष विसिष्षिय ॥ १३१ ॥

कवित्त ॥

रवि ससि जादव वंस ॥
ककुस्थ परमार सदाबर ॥
चाहुवान चालुक्य ॥
छंदक सीलार आभीयर ॥
दोयमतमकवान ॥

गुरुअ गोहिल गोहिल पूत ॥
चापोत्कट परिहार ॥
राव राठोर रोस जूत ॥
देवरा टांक सैंधव अनंग ॥
पोतिक प्रतिहार दधिषट ॥
कोरट्ट पाल कोट पाल हुल ॥
हरितट गोरक माष मट ॥ १३२ ॥

दूहा ॥

धान्यपालकनि कुंभ वर ॥
राजपाल कविनीस ॥
कालछुरक आदि दे ॥
वरने वंस छत्तीस ॥ १३३ ॥

कवित्त ॥

पढन मंच रिष जाय ॥
च्यार षिचो उप्पाए ॥
कुचिल दीन परिहार ॥
पैरि रष्षहु सत भाए ॥
चतुर बीर चाहुवांन ॥
च्यार मुषे दोबाहं ॥
अष्ट अष्ट आरिष्ट ॥

देव चारिष्ट सुसाहं ॥
पंमार वाह धन धन करह ॥
कह्यौ रिष पंमार धन ॥
चालुक्क बाह चालुक्क दुज ॥
कुसित कुसन मंडि ततन ॥ १३४ ॥
अनल्ल कुंद आभंग ॥
उपजि चौहांन अनिल्ल थल ॥
सुकर संठि करि वार ॥
धनुष संग्रह्यौ बांन बल्ल ॥
तिन रष्षि सपरिबार ॥
धार सुष धरनि निघट्टिय ॥
षल जुषित संमुहें ॥
तिनह सिर सस्त्रन तुट्टिय ॥
बंभान जग्य निरबिघन किय ॥
पुहप वृष्टि सुर सीस रजि ॥
रष्षी सु धरनि षग भुज्जबर ॥
रिष्ट निवारिय दुष्ट भजि ॥ १३५ ॥

दूहा ॥

तिन रक्षा कीनी सु दुज ॥
तिहि सु वंस प्रथिराज ॥

सो सिरषत पर वादनह ॥
किय रासैा जुविराज ॥ १३६ ॥

छंद पद्धरी ॥

ब्रह्मान जग्य उत्पन्न मूर ॥
चहुवांन अनल अरिमलन सूर ॥
उतंग अंग प्रचंड बाह ॥
पहुमीस इंद अरिगिलन राह ॥
प्रतिपाल धरनी अंग सु ध्रम्म ॥
श्रुतमान कीन उतंग क्रम्म ॥
रतो सुजोग भव भोग भास ॥
पुर अमर नाग नर किति जास ॥
तासु अन सूर सामंत देव ॥
अरिमंत मत्त मत्ता जुरेव ॥
महदेव सु अन मोहंत तास ॥
सु प्रसन्न ईस सेवंत जास ॥
वर अजय सिंघ सिंघह सु राम ॥
नर बीर सिंघ संग्राम ताम ॥
सुअ बिंद सूर उदारहार ॥
आसोक श्रीय संका बिडार ॥

सुअ बैर सिंघ बैरी विहंड ॥
सुव बीर सिंघ अरि बीर डंड ॥
अरिमंत सकल कलि कलन चूर ॥
मानिक राव चहुआन सूर ॥
राजत सु अन ता सहस मथ्थ ॥
मह सिंघ सिंघ संग्राम पथ्थ ॥
सुअ चंद्रगुपत सम चंद्र रूप ॥
प्रताप सिंघ आरेन दूप ॥
सुत मोह सिंघ वर मोह रूप ॥
भूत भयंकर रन रत भूप ॥
सुत सेन राइ वह सेनवंत ॥
संप्रति राइ सुभ ततमंत ॥
सुअ नागहस्त सम नाग राज ॥
अस्थूल नंद आनंद राज ॥
गिर लोह धीर सुत ध्रम्म सार ॥
सुअ बीर सिंघ संका विडार ॥
सुअ विबुध सिंघ समजोग सूर ॥
जस चंद्र राय वर अजस दूर ॥
सुत किस्न राज जस किस्न चिंत ॥
हरहरह राइ नर बुधिमंत ॥

बालन राय वलि अंग तास ॥
सुअ प्रथम राइ पहुमी प्रहास ॥
तिन अनुज अंग राजन अनेय ॥
कलि अलप आउ कित्ती अछेय ॥
धर्माधि राज रति जोग भोग ॥
षट षुंट षित्ति षग्गह सु भोग ॥
जग्ग दुष बीर बीसल्ल नरिंद ॥
महपाप रत द्रव्यान अंध ॥
क्रत अक्रित काम क्रितह सु कीन ॥
जिन असुर घोर षनि द्रव्य लीन ॥
संसार थागि फुनि द्रव्य काज ॥
उपजाइ मति अजमेर राज ॥
कोडी सु मोल गज कियो एक ॥
लीयो न किनह फिरि सहर नेक ॥
कामंध अंध सुझ्यैा न काल ॥
हक अहक जोरि गिरि इक्क माल ॥
चल्यैा न राजनीतह प्रमांन ॥
आनीत बंधि न्टप थांन थांन ॥
सुझ्यैा न ध्रम्म चल्यैा प्रमान ॥
मुकजो निगंम करि अगम मान ॥

अबलोह छोह छंडिय सुकित्ति ॥
मुक्कयो धंम अाधंम जित्ति ॥
दरबार अतिथ दीसै न कोइ ॥
अप्प सुह कित्ति संभरै लोइ ॥
चौसठि बरस बर राज कीन ॥
पायौ न पुत्र फल सुष्षहीन ॥
बल अबल चित चिंत्यौ सु काल ॥
पायो न सुक्रत कछु करन साल ॥
गति अंत सुमति सो होइ बीर ॥
पावै सु जंम जज्जर सरीर ॥
द्रवि गयौ सुमन बीसल नरिंद ॥
उप्पनौ बीर छिति बीष्य कंद ॥
धन मदन सदन भरि सब्ब जंम ॥
तिहि परत उदि क्रत्या कदंम ॥
क्रत्या कदम उर असुर रज्जि ॥
धर ढुंढा नाम दानव उपज्जि ॥
जगि जोग नयर जुगनीय थांन ॥
पुज्जै स अाय उग्गति विहान ॥
रथ च्यार चक्र उतंग बाह ॥
असि असिय हथ्थ मुष अग्ग दाह ॥

संभरिय धरा धरनीय ठाइ ॥
पुकर्यौ नरनि रे जाहु जाइ ॥
सिर कोपि रीस धुनि दसन बज्जि ॥
उभरे षग्ग जनु इंद्र गज्जि ॥
प्राहार पाय धुरनि धुज्जि ॥
पुर नयर तद्र उर हक्कि बज्जि ॥
कंपो सु भूमि नव षंड मांनि ॥
जर्ज्जरिय नाव ज्यौं वाय पान ॥
लग्गे न पलक द्रगदेव चछ्छि ॥
डक्कै डकार द्रगपाल गछ्छि ॥
दिष्यौ सरूप दानव उतंग ॥
वैराट रूप हरि धर्यौ अंग ॥
पंषी रु म्रग्ग नर सर्प भाजि ॥
आघात सद्द दानव सु गाजि ॥
चित चिंत चित जुग्गिनी प्रधान ॥
पुज्जै सु आनि उग्गति विहान ॥
चहुआन रूप दानव प्रमान ॥
भज्यौ सु पुच आबु सथान ॥ १३७ ॥

दूहा ॥

सो दानव अजमेर वन ॥

रहतह दिन घन अंत ॥
सून्य दिसान न जीविकौ ॥
थिर थावर द्रिग मंत ॥ १३८ ॥

मुरिल्ल ॥
संभरि सोर नरिंदह संभरि ॥
पंथ प्रजा पसरै रन जंगर ॥
रम्य अरम्य करी सु धरनिय ॥
रहे मठ कोट अफोट करनिय ॥ १३९ ॥

दूहा ॥
गौरां चलि रनथंभ गिरि ॥
सारंग सच्चौ राह ॥
प्रजा पुलंदी महिम धरि ॥
ग्रभ अनल गोराह ॥ १४० ॥
अनल ग्रभ धरि गौरि सिसु ।
गय रनथंभ दिसान ॥
रा जद्दव रावत पति ।
मातुल पष चाहुवान ॥ १४१ ॥

छंद भुजंगी ॥
धरै गौर जन्नंम आनल्ल राजं ॥
वसे देवगामं दुनी छच लाजं ॥

नवं वृत्त नित्तं नवं वृत सिष्षै ॥
नरं तारतारं नवं भृत भिष्षै ॥
चरं संभरी वात्त पुछंत मित्तं ॥
धरै ध्यान दिष्षै अजमेर चित्तं ॥
कला अब सिषिं महामल्ल वीरं ॥
गिनै माग आमं पढै मंच धीरं ॥
दिनं सीह अब्बीह आषेट षिल्लै ॥
ननं नेह निद्रा सुरं सिद्ध मिल्लै ॥
करं पाइकं विद्व साइकं नष्षै ॥
भरंभे अभैन सोई सब्ब रष्षै ॥
बधे काम कामं अली होन भष्षै ॥
सुभै राजसं तामसं सत्तं चष्षै ॥
रमै जम सेना ग्रहे जम भारी ॥
साई संभरि बात दिष्षै करारी ॥
कहै काल कालं अकालं तिबंधै ॥
इतं जो रमावित सों चित संधै ॥
दुअं बाह परचंड दुर्ग्ग सरूपं ॥
इसो दिष्यियै राज आना अनूप ॥ १४२ ॥

कवित्त ॥

अति बल बंड प्रचंड ।

हिंड आषेटक षिल्लै ॥
हिरन रोज वाराह बंधि ।
बागुर वर मिल्लै ॥
बन पर्वत झिरना निवान ।
राई राजन संग हिंडै ॥
राग रंग भाषा कवितं ।
दिव्य वानी चित मंडै ॥
हय हथ्थिय देत संषै न मन ॥
षग्ग मग्ग षूनी वहै ॥
चहुवान वंस अवतंस इम ।
रंग अनेक आना रहै ॥ १४३ ॥

दूहा ॥

तन मंडी मही अप्पनी ।
छंडी बालक बुद्धि ॥
रोस रम्यौ अरि अंग में ।
तव पुछि मातह सुद्धि ॥ १४४ ॥

गाहा ॥

सर तर अष्षर विद्या ।
सा विद्या अन्य सारसी नथ्थी ॥
सो आना अनभंग ।

मंचंनं प्रिय यो सष्षी ॥ १४५ ॥
जा सिसु बीरं पतनी ।
बीर होइ बीर भज्जायं ॥
नवं तीन वत्त तरंगं ।
सा मालं वीर या पुत्तं ॥ १४६ ॥

दूहा ॥

बीर पुत्त मातुल सुमति ।
गवरि सपन्नो जाइ ॥
को किहि वंसहि ऊपज्यौ ।
तुम मुझ जंपहि माइ ॥ १४७ ॥
गौरि मात कहै पुच सैां ।
पुत न पुछहु वत्त ॥
जिहि भय जल लोचन भरहि ।
वर पुछन परतत ॥ १४८ ॥

छंद पद्धरी ॥

उचर्यौ मात सों पुच सच्चि ॥
जानों न वंस मो पिता वच्च ॥
मो तात नाम बंदी न लेहि ॥
नन करो श्राद्ध कबहूं गेह ॥
अप्पैां न अंब अंजुलीय तात ॥

उप्पनौ बेदहु किनसु गात ॥
के नाम लेय मातुलह वंस ॥
पित वैर लेऊ बर बीर हंस ॥
छंडों कि प्रानं मुक्कूं ब देह ॥
संसार भार अप्पों कि छेह ॥
आनां नरिंद यह कहिय बात ॥
सुनि श्रवण अप धर परिय मात ॥ १४९ ॥

दूहा ॥

पुत्र प्रगट्ट न कीजियै ।
मो तिय इय अंदेह ॥
आदि हुते दानव प्रबल ।
धर धुंमी असुरेह ॥ १५० ॥
भिर न कहत दानव सरिस ।
मानव मनुषो देह ॥
मो गंधारी निहारि मुष ॥
पुच विलासनि गेह ॥ १५१ ॥

अरिल्ल ॥

इह मातुल वंस प्रधानह मांन ॥
भये दस पुत्त सु मांनिक थांन ॥

विचारि कयौं तहां संभरि ग्राम ॥
वस्यौ अजमेर सुमंत विश्रांम ॥ १५२ ॥

कवित्त ॥

धर मुक्किय बलि राय ॥
मात लभ्यौ न कित्ति रस ॥
धर मुक्किय सुअ पंड ।
सुष्ष मुक्यौ सु दुष्ष वसि ॥
धर मुक्किय श्रीराम ।
सीया षोइय बल गोइय ॥
धर मुक्की नलराय ।
सिरां कालंक तज्यौ इय ॥
धर मुक्कि वीर हरचंद न्टप ।
नीच घरह घट जल भयौं ॥
ढंकन सु भूमि न्टप जानियै ।
न्टप ढंकन इल चर कयौं ॥ १५३ ॥
न्टप ढंकन इल होइ ॥
इलह ढंकन सु राज भर ॥
षह ढंकन वर देव ।
देव ढंकन वर अंबर ॥
अप जस ढंकन किति ।

किति ढंकन जस धारिय॥
औगुन ढंकन विद्या।
सुगुन विद्या उच्चारिय॥
ढंकनह काल वर ध्रंम कों।
ध्रंम काल ढंकन करिय॥
मा वित्त गुरू ढंकै जु सिसु॥
सिसु ढंकन पित उच्चरिय॥ १५४॥

अरिल्ल॥

दुहि विधि आनल बत उचारिय॥
पुब्ब कथा संभरि संभारिय॥
किहिं विध राषस ढुंढ उपंनौ॥
सारंग दे कैसै जुद्ध कीनौ॥ १५५॥

दूहा॥

एक बत तुम सों कहौं॥
मात कथा समझाइ॥
नर किहि विध दानव भयौ॥
इह अचिरज मो आइ॥ १५६॥
जो मो सों साच न कहौ॥
तो हौं छंडों देह॥

इह अप्पन जिय जांनि जहु ॥
नव निहचे निज ग्रेह ॥ १५७ ॥

गाथा ॥

कथि मा कांनन कथयं ॥
जो मो ऊपर पुच हितार्या ॥
जीवन वृथा परंनी ॥
आना नह आंन उपायं ॥ १५८॥

दूहा ॥

पुचहि सुनि दानव कथा ॥
श्रवन सुनत होइ भंग ॥
इह अरिष्ट अंग उप्पजै ॥
पित परिपिता प्रसंग ॥ १५९ ॥

मुरिल ॥

ऐसी कहि मो कहुं डर पावहु ॥
मेरे कछुई दाय न आवहु ॥
रामाइन भारथ की बाता ॥
सो हों सबें सुनत हों माता ॥ १६० ॥

माता वाच । कवित्त ॥

जिहि पुर गवन न होई ॥
ताहि कोइ पंथ न बुझै ॥

जिहां दिष्ट नह भिदै ॥
ताहां कैसै करि सुझ्झै ॥
जो श्रवन ननह सुनी ॥
सु कहौ कैसी परि कहियै ॥
जाकै देह न होइ ॥
ताहि कैसें कैं गहियै ॥
इह कथा असम अद्भूत अति ॥
हठ निग्रह सुत जिन करै ॥
सुनत हि श्रवन दुष उपजै ॥
सिद्ध न कोइ कारिज सरै ॥ १६१ ॥
मात सुनहु मुझ बात ॥
कथा सुनें ते कहा लग्गे ॥
केते नर रिष राइ ॥
भये सुर दानव आगे ॥
तिन की कथा प्रसंग ॥
सुनि सब कोइ समुझावहि ॥
तिन कौ जुद्ध विरुद्ध ॥
लोक वेदन में गावहि ॥
इह जांनि मात श्रवन न सुनैं ॥
कहे तें कछु लग्गै नहै ॥

जै जै न्रिमांन विधि न्रिमए ॥
ते ते निहचै न्रिब्बहै ॥ १६२ ॥

मुरिल ॥

पुत्त सुनहु इह बत पुरानी ॥
कहे ते होइ गदगद वानी ॥
अनल कुंड आबू रिष कीनै ॥
राज उपाइ राज सिर दीनै ॥ १६३ ॥
ता के कुल तें उप्पनै ॥
माहाराज धम्माधि ॥
ता के बीसल देव न्टप ॥
सबै राज आराधि ॥ १६४ ॥

कवित्त ॥

आठ सैं रु इकईस ॥
बैठि बीसल सु पाठ वर ॥
सुक्रवार प्रतिपादा ॥
मास वैसाष सेत पष ॥
आये वंस छत्तीस ॥
विप्र बंदी जन सारै ॥
दीयै छच सिर तिलक ॥
वेद मंचह उच्चारै ॥

आनंद अग्ग वर इंद्र सम ॥
ध्म्मनंद जस उद्धरै ॥
अजमेर नयर अरि जेर करि ॥
विमल राज बीसल करै ॥ १६५ ॥

दुहा ॥

बर पट्टन अट्टन अमित ॥
समित वेद फुनि राज ॥
समय अंत बीसल सिरह ॥
धर्यौ छच सम साज ॥ १६६ ॥

छंद पद्धरी ॥

सिर मंडि छच बीसल नरिंद ॥
आसनह सिंघ बर बरन इंद ॥
भूदेव मंडि वेदी विसाल ॥
रस पंच मेधि मखे तिकाल ॥
बर वटी ज्वाल खंडन विभाग ॥
जमि रहे जमल पुट पलति लाग ॥
मष समुष दिष्ष परस्पर बेन ॥
तिन पुट हबी चतन धूम अंन ॥
जानीत बेद मुष रहे मोंन ॥
सुभ समय असुभ उच्चार कोंन ॥

संपूर बेद किन्नो भिषेक ॥
दुज दइय बंध आसिष असेष ॥
बिधि अैन राज दिय सु लप माल ॥
जै जया सबद बीसल भूआल ॥ १६७ ॥

दुहा ॥

लसय पाट बीसल न्टपति ॥
विकल इछ घन मार ॥
षंडन चिय दंडन करै ॥
बिन अपराध अतार ॥ १६८ ॥

कवित्त ॥

इसौ बीर बीसल नरिंद ॥
अजमेर नैर पर ॥
रचि रचना पुर दिव्य ॥
मनौं विस्वक्रम्म कीय कर ॥
अध्रम ध्रम उप्परैं ॥
क्रम दुक्रित नन इछै ॥
हक्क द्रव्य संग्रहै ॥
विना हक्क लोभ न वंछे ॥
चव वरन सरन चहुआन कै ॥
वंस छत्तीस सेवंत हौ ॥

वीसल नरिंद भ्रमाधिधारि ॥
देव कला देव तही ॥ १६९ ॥
पटरागिनि परिहार ॥
ग्रभ सारंग उप्पनौ ॥
पुत्र होत भई मृत्य ॥
बाल बानिक कों दीनौ ॥
ता बानिक नंदिनि ॥
नाम गौरी सारंग सम ॥
इक थान पय पान ॥
इक सिज्या इक आसन ॥
नव बरस लग्गि कन्या रही ॥
व्याह राज बीसल कियौ ॥
वीवाह हुओ बर बन गयौ ॥
तहां सिंघ वर विनस्सयौ ॥ १७० ॥

दुहा ॥

सिंघ विनास्यौ वनिक सुत ॥
कन्या कियौ अन्दोह ॥
व्रत धर्यौ ब्रह्मचर्य कौ ॥
तप पहुकर तजि मोह ॥ १७१ ॥

छंद पद्धरी ॥

अति दुचित भयौ सारंग देव ॥
नित प्रति करै अरिहंत सेव ॥
बुध भ्रम लियौ बंधे न तेग ॥
सुनि स्रवन राज मन भौ उद्देग ॥
बुल्लाइ कुंवर सनमान कीन ॥
किहि काज तुम इह भ्रम लीन ॥
तुम छंडि सरम हम कहौ बत ॥
बानिक पुच हन तें दुचित ॥
इह नष्ट ग्यान सुनिये न कान ॥
पुरुषातन भज्जै कित्ति हान ॥
तुम राजवंस राजनह संग ॥
म्रगया सर षेलो बन दुरंग ॥
परमोध तजो बोधक पुरान ॥
रामायन सुनहु भारथ निदान ॥
अभिमान दान रिन सरन भ्रम ॥
चार्यौं प्रकार सुनि राज क्रम ॥
परमोध मानि राजन कुमार ॥
तत काल मंगि बंधे हथ्यार ॥
भय प्रसन्न राज कीनैा पसाव ॥

रजधांन संभरिय करहु जाव ॥
गजराज पाट हैं बर उतंग ॥
सिंघासन दीनै। जटित नंग ॥
तुम जाहु कुंअर संभरिय थांन ॥
किरपाल करिय कायथ प्रधांन ॥
प्रोहित मुकुंद सारंग चुहांन ॥
साचोर धनी नरसिंघ भांन ॥
षंधार लार बहबल बलोच ॥
दीय बहुत हसम कियै। न सोच ॥
अंनेक जाति उमराव सथ्थ ॥
है गै नर वाहन सुतर रथ्थ ॥
तिहि बार धाय बांनिक बुलाइ ॥
जिन जाहु कुंअर की सथ काय ॥
तुम कियै। पुत्र सों मेक मूढ ॥
षिझि वेन कह्यौ कहा देहु दंड ॥
अजमेर मेह्लि संभरि दिसान ॥
जो जाहु तब्ब षंडौ षरान ॥
इतनी कथ्थि न्टप चल्यौ मथ्थ ॥
रथ च्यार भरे तिन बार अथ्थ ॥
जोजनह एक कीनै। मिलान ॥

अंनेक भष्य तहां षान पान ॥
भय प्रात प्रसन्न पग लग्गि पुत्त ॥
चलि सीष मंगि संभरि पहुत्त ॥
सर जाय पहुंचिय संभर* राय ॥
मन बच्च सुद्ध करि क्रंम्म नाइ ॥
दस महिष भंजि तहां बलि सुदीन ॥
जज्ञ होम धोम सुर प्रसन्न कीन ॥
कीनो प्रवेस सुर महिम मौलि ॥
तोरन कलस बंधि राजपोलि ॥ १७२ ॥

कवित्त ॥

किय प्रवेस सारंग देव ॥
संभरिय थांन थिर ॥
आय बैस्य षिचि अनेक ॥
पग लग्गि नम्मि नर ॥
तब कायथ किरपाल ॥
सबन कौं अग्या दीनी ॥
ससच बस्त्र दत चित ॥
देय दिलासा किनी ॥
जदवनि गौरि आइय जबहि ॥

---

* संभ T.